# सुद्धप्पा

# ( शुद्धात्मा )

आचार्य वसुनन्दी मुनि

ग्रंथ : सुद्धप्पा ( शुद्धात्मा )

मंगल आशीर्वाद : परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य
श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज

ग्रंथकार : परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य
श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

संपादन : आर्यिका वर्धस्वनंदनी

प्राप्ति स्थान : ई-16, सैक्टर-51 नोएडा ( गौतमबुद्ध नगर ) 201301
मो. 9971548889, 9867557668

ISBN : 978-93-94199-31-6

संस्करण : द्वितीय 1000 ( सन् 2022 )

प्रकाशक : निर्ग्रन्थ ग्रंथमाला समिति (रजि.) (सर्वाधिकार सुरक्षित)

मुद्रक : ईस्टर्न प्रेस
नारायणा, नई दिल्ली-110028
दूरभाष: 011-47705544
ई-मेल: info@easternpress.in

# सम्पादकीय

**विज्जारहमारूढो, मणोरहपहेसु भमदि जो चेदा।**
**सो जिणणाणपहावी, सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो।।**
**आ. कुंदकुंदस्वामी, समयसार, 7-44-236**

जो आत्मा विद्यारूपी रथ में आरूढ़ हुआ मनोरथ मार्ग में भ्रमण करता है, उसे जिनेन्द्र देव के ज्ञान की प्रभावना करने वाला सम्यग्दृष्टि जानना चाहिए।

**एदम्हि रदो णिच्चं, संतुट्ठो होहि णिच्चमेदम्हि।**
**एदेण होहि तित्तो, होहिदि तुह उत्तमं सोक्खं।।**
**आ. कुंदकुंद स्वामी, समयसार, 7-14-206**

हे भव्य! तू इस ज्ञान में सदा प्रीति कर इसी में तू सदा सन्तुष्ट रह, इससे ही तू तृप्त रह। (ज्ञान में रति, सन्तुष्टि और तृप्ति से) तुझे उत्तम सुख होगा।

सम्यक्ज्ञान की निर्मल धारा चेतना के धरातल पर पड़े विषय-कषाय-अघ की धूल को नष्ट करती है। जिस प्रकार मंद सुगंधित जल की वर्षा चित्त में आह्लाद उत्पन्न करती है व साथ ही वृक्षादि को संवर्द्धित, पुष्पित, फलित व पल्लवित करने में समर्थ होती है उसी प्रकार सम्यक्ज्ञान रूपी जल की वर्षा से चेतना आह्लादित होती है, परिणामों में विशुद्धि संवर्द्धित होती है तथा संयम, तपादि उत्पन्न होते हैं। ज्ञान में अनुरक्त व्यक्ति के लिए मोक्षमार्ग अत्यंत सरल प्रतिभासित होता है जबकि तत्त्वज्ञान से विहीन विषादयुक्त दिखाई पड़ता है। ज्ञान की इसी निर्मल धारा में प्रतिपल अवगाहन करने वाले और अन्य भव्य जीवों के लिए भी पुण्यकोष की वृद्धि में निमित्त बनने वाले आचार्य गुरुवर ने कई प्राकृत ग्रंथों की रचना की।

**प्राकृत भाषा:-** भाषा संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। "**प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्**" प्रकृति व स्वभाव से सिद्ध प्राकृत है।

जिस प्रकार मेघ का जल स्वभावत: एकरूप होकर भी नीम, गन्नादि विशेषाधारों से संस्कार को पाकर अनेकरूप में परिणत हो जाता है, उसी प्रकार स्वाभाविक सबकी बोली प्राकृत भाषा पाणिनि आदि के व्याकरणों से संस्कार को पाकर उत्तरकाल में संस्कृतादि नाम पा लेती है। प्राकृत शब्द स्वयं अपनी स्वाभाविकता एवं व्यवहार-मूलकता को कह रहा है।[1]

अपनी कला, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य एवं संस्कृति की मौलिकता एवं उत्कृष्टता के कारण ही भारत को विश्व-गुरु की संज्ञा प्राप्त हुई। तथा उसकी इस विविधतापूर्ण प्रज्ञा की एक प्रमुख संदेशवाहिका भाषा प्राकृत थी, जो कि अतिप्राचीन काल से वृहत्तर भारत में जन-जन की भाषा बनी रही। विश्व की प्राचीन 'सिन्धु सभ्यता' के लोगों की भाषा 'प्राकृत' थी। जो मृण्मयी मुद्रालेख सिंधु सभ्यता के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं, वे सभी प्राकृत-भाषामय हैं।

इस देश की संस्कृति इस देश की आत्मा के स्वर प्राकृत भाषा में ही मुखरित हुए हैं क्योंकि प्राय: समस्त भारतवासी प्राकृत भाषा-भाषी थे। प्राकृत की महत्ता को बताते हुए कहा है भारतीय संस्कृति एवं इतिहास तब तक अधूरा रहेगा जब तक कि उसका प्राकृत व पालि से संबंध न जोड़ा जाए।[2]

आचार्य श्री के ग्रंथों में शौरसेनी प्राकृत दिखाई पढ़ती है। छठी सदी के प्राकृत-वैयाकरण वररुचि का सूत्रवाक्य "**प्रकृतिः शौरसेनी**"। जिसके अनुसार शौरसेनी प्राकृत सभी प्राकृतों की मूल प्रकृति है। "**प्राकृतमणिदीपकार**" ने तो शेष समस्त प्राकृतों के अधिकांश रूपों के लिए 'शेषं शौरसेनीवत्' कहकर समस्त प्राकृतों की शौरसेनी-मूलकता प्रमाणित कर दी है। स्पष्ट है कि शौरसेनी ही मूल प्राचीन प्राकृत भाषा थी। शूरसेन प्रदेश में विकसित होने के कारण ही नहीं अपितु इसके विशालतम साहित्य व प्राचीनतम् प्रयोगों के कारण 'शौरसेनी' नाम दिया गया। शौरसेनी के लिए कहा है-

**राजपत्न्यादिवक्त्रेन्दु-संवास-हृदयंगमा।**
**मृदुगंभीर संदर्भा शौरसेनी धिनोतु वः।।**
**-मार्कण्डेय का दशग्रीववध महाकाव्य**

रानी के अंत:पुर में रहने वाली अन्य महिलाओं के मुख रूपी चंद्रमा एवं हृदय कमल में जो भलीभाँति निवास करती है, वह लालित्य व गांभीर्य से युक्त शौरसेनी प्राकृतभाषा तुम सबको प्रसन्न करे।

मृदु व गंभीर ये गुण व विशेषण राजवर्ग से संबंधित हैं। जिस प्रकार अंत:पुर में राजा का प्रवेश प्रसन्नता के लिए होता है उसी प्रकार राजसभा, संगोष्ठी आदि में शौरसेनी का प्रयोग आनंदवर्द्धन के लिए होता है।

प्रस्तुत '**सुद्धप्पा**' नामक ग्रंथ गाथा छंद में 174 श्लोकों में निबद्ध है। यह ग्रंथ, ग्रंथकार के आध्यात्मिक हृदय को व्यक्त करता है। इसमें तीन प्रकार की आत्मा बहिरात्मा, अंतरात्मा व परमात्मा कही गई हैं और उत्तम, मध्यम, जघन्य रूप अंतरात्मा के तीन भेद बताए हैं। इसका प्रत्येक काव्य मानो भेदविज्ञान का सूत्र है। जिस प्रकार आकाश में उड़ान भरने के लिए पक्षी को दो पंखों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मोक्षार्थ मुक्त गगन में विहार करने हेतु व्यवहार और अध्यात्म दोनों की आवश्यकता होती है।

व्यवहार की पगदंडी पर चलकर ही अध्यात्म की उड़ान भरी जा सकती है। आचार्य गुरुवर श्री ने जहाँ व्यवहार का कथन किया वहीं सुद्धप्पा जैसे गूढ़ आध्यात्मिक ग्रंथ की रचना की, जिससे मोक्षमार्ग में आगे बढ़ने वाले भेदविज्ञानी हों, अपने लक्ष्य की ओर शीघ्र बढ़ें।

**भव्वुल्लो अब्भसेदि, सया चेयण-पोग्गलाण भेयं च।**
**होदि अच्चुदो अप्पे, णाणी खलु तच्च-चिंतमाणो।।143।।**

जो भव्य जीव चेतना व पुद्गल के भेद का सदा अभ्यास करता है वह ज्ञानी तत्त्व-चिंतन करता हुआ निजात्म में अच्युत अर्थात् स्थिर होता है।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज से लेकर सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज तक की गौरवशाली परम्परा

का निर्वहन परमपूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज कर रहे हैं और मोक्षमार्ग में श्रम के साथ जिनशासन के संरक्षण व संवर्द्धन में श्रमरत हैं और इसी को चिर जीवंतता प्रदान करने हेतु जिनशासन के अन्य प्रभावक कार्यों के साथ प्राकृत में कई ग्रंथों का लेखन किया।

यदि इस ग्रंथ के संपादन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधित कर पढ़ें, हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से ही इसका अध्ययन करें। परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज के संयम, तप, ज्ञान, साधना का सौरभ सहस्र वर्षों तक संपूर्ण विश्व को सुरभित करता रहे। उन्हें आरोग्य की प्राप्ति हो एवं अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करें। परम पूज्य गुरुवर के चरणों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमन।

''जैनम् जयतु शासनम्''

**-आर्यिका वर्धस्व नंदनी**

# अनुक्रमणिका


मंगलाचरण.....1
ग्रंथ प्रतिज्ञा.....2
द्विविधात्मा.....2
त्रिविधात्मा.....2
दीर्घ संसारी.....3
अंतरात्मा.....3
बहिरात्मा.....3
परमात्मा.....4
जघन्य अंतरात्मा.....4
मध्यम अंतरात्मा.....4
उत्कृष्ट अंतरात्मा.....4
अरिहंत.....5
परमात्म पर्यायवाची.....5
रत्नत्रय बल.....6
आत्मज्ञान विमुख.....6
देह में आत्म बुद्धी.....6
आत्म स्वरूप.....6
ज्ञानी-अज्ञानी.....7
अनादि संस्कार.....7
सम्यक्त्व बुद्धि.....8
मूढ़ बुद्धि.....8
अज्ञानी.....8
भव-दु:ख मूल.....9
सुख कहाँ.....9
तत्त्वज्ञानी सुखी.....9
ज्ञानदीप.....9
किससे बोलूँ.....10
शुद्धात्म स्वरूप.....10
आत्म चेष्टा.....11
विपरीत प्रवृत्ति.....11
अग्राह्य ग्रहण.....11
शाश्वत स्वत्व.....12
शाश्वतात्मा.....12
हेयोपादेय.....12
स्वसंवेद्यात्मा.....12
भ्रांति.....13
मिथ्या अन्वेषण.....13
सम्यक् प्रवृत्ति.....13
परत्व बुद्धि.....14
जो है सो है.....14
अयथार्थ-प्रवृत्ति.....14
गम्यागम्य.....15
स्वात्म दर्शन.....15
अमित्र-अशत्रु.....15
समदृष्टि.....15
अदृश्य स्वत्व.....16
परम पद क्रम.....16
शुद्धात्म चिंतन.....16
परमात्म स्थिति.....17
भय व निर्भय.....17
अतीन्द्रिय दृष्टि.....17
पूज्य कौन.....17
स्वात्म दर्शन.....18
आत्म रमण.....18
स्वात्मोपलब्धि कैसे.....18
मोक्षाधिकारी.....19
समत्व.....19
चंचल चित्त.....19
दृश्यमान कब.....19
स्वात्म दर्शन कब.....20
शुभाशुभ चित्त.....20
मोही निर्मोही.....20
मोह विलय.....21
विज्ञ प्रवृत्ति.....21
तत्त्वज्ञान.....21
स्वस्थिति.....21
अयोग दशा.....22
अलिंग आत्मा.....22
पूर्व संस्कार.....22
संस्कार क्षय.....23
चेतन-अचेतन.....23
हित-अहित.....23

हित सामर्थ्य.....23
इंद्रियागोचर.....24
त्याज्य-अत्याज्य.....24
तत्त्वज्ञ प्रवृत्ति.....24
सहज वृत्ति.....25
लोक प्रवृत्ति.....25
आत्मदृष्टा.....25
अक्षुब्ध चित्त.....25
शाश्वत ज्योति.....26
ध्येय.....26
ग्राह्य.....26
संयम-सुख.....27
अतत्त्ववेत्ता.....27
मोही वृत्ति.....27
निर्भ्रान्त दृष्टि.....27
विषयासक्त.....28
विषयोन्मुखी.....28
अनात्म रुचि.....28
शुद्धात्माकांक्षी.....29
वचनागोचर.....29
अकथ्य-स्वानुभव.....29
अकथ्य-आत्मतत्त्व.....29
शुद्ध निश्चय.....30
शब्दातीत शुद्धात्मा.....30
स्वात्म दृष्टि.....30
विजातीय देह.....31
कर्मास्रव.....31
संसार वृद्धि.....31
थूल-सूक्ष्म देह.....32
जीर्ण-नव देह.....32
नष्ट-उत्पन्न देह.....32
कृष्ण-श्वेतदेह.....32
रक्त-पीत देह.....33
गुरु-लघुदेह.....33
आर्द्र शुष्क देह.....34
दह्यमान शरीर.....34
देह-हानि वृद्धि.....34
बद्धात्मा.....34
निर्विष.....35
आवरण.....35
भावकर्म.....35
द्रव्यकर्म.....36
नोकर्म.....36
भव-वर्द्धक हेतु.....36
जन संसर्ग.....36
स्वात्मवास.....37
स्वभावलीन.....37
मोक्ष मूल.....37
गुरु-शिष्य.....38
निमित्त-नैमित्तिक संबंध.....38
तत्त्वज्ञानी निर्भीक.....39
मृत्यु रहित आत्मा.....39
निश्चय-व्यवहार.....40
स्वभाव अवासि.....40
स्वज्ञ अच्युत.....40
तत्त्वानुभव.....40
शुद्धात्म लीनता.....41
महत्त्वपूर्ण आत्मबुद्धि.....41
मुक्ति क्रम.....41
त्याज्य.....42
निर्विकल्प दशा.....42
उभय विहीन.....42
उभय बाधा.....42
पुष्पवत् पुण्य.....43
सहजोपलब्धि.....43
मोही की प्रवृत्ति.....44
समर्थ कौन.....45
भेद-विज्ञान.....45
श्रद्धा-लीनता.....45
अभेद रत्नत्रय.....45
शुद्धात्मा ही परमात्मा.....46
निमित्त प्रभाव.....46
सिद्ध ध्यान.....47
योगी भावना.....48
अंतिम मंगलाचरण.....48
हंस प्रवृत्ति.....48
ग्रंथकार की लघुता.....48
प्रशस्ति.....49

आचार्य श्री वसुनंदी जी विरचित

# सुद्धप्पा ( शुद्धात्मा )

## मंगलाचरण

**सम्मत्ताइ-गुणेहिं, सुद्धपज्जाय-जुत्ता णिम्मला य।**
**सालंबियर-झाणस्स, तहा भव्वाण सिद्धि-हेदू।।1।।**
**णमिदूण सव्व-सिद्धा, णिक्कम्मा सस्सद-सहाव-जुत्ता।**
**गमणागमणविहीणा, णिवासिणो लोयग्गसिहरे ।।2।।**
**सव्वण्हू जिणदेवा, वीदरायी घाइकम्महीणा य।**
**सव्वा अरिहंता खलु, तियाले तिजोगेहि णमामि।।3।।**

**अन्वयार्थ-सालंबियर-झाणस्स**-सालंब व इतर (अर्थात् निरालंब) ध्यान के **तहा**-तथा **भव्वाण**-भव्यों की **सिद्धि-हेदू**-सिद्धि के हेतु **सम्मत्ताइ-गुणेहिं**-सम्यक्त्वादि गुणों से **य**-और **सुद्धपज्जाय-जुत्ता**-शुद्ध पर्याय से युक्त **णिम्मला**-निर्मल **णिक्कम्मा**-निष्कर्म **सस्सद-सहाव-जुत्ता**-शाश्वत स्वभाव से युक्त **गमणागमणविहीणा**-गमन-आगमन से रहित **लोयग्गसिहरे**-लोक के अग्र शिखर पर **णिवासिणो**-निवास करने वाले **सव्व-सिद्धा**-सभी सिद्धों को **णमिदूण**-नमस्कार करके **सव्वण्हू**-सर्वज्ञ **जिणदेवा**-जिनदेव **वीदरायी**-वीतरागी **य**-और **घाइकम्महीणा**-घाति कर्म से हीन **सव्वा**-सभी **अरिहंता**-अरिहंतों को **तियाले**-तीनों काल में **तिजोगेहि**-तीनों योगों से **खलु**-निश्चय से (मैं आचार्य वसुनंदी) **णमामि**-नमस्कार करता हूँ।

**उसहाइ-वीरादो य, सव्वा तित्थयरा वट्टमाणस्स।**
**पणमामि सव्वदा हं, सग-सुद्धप्प-गुण-लद्धीए।।4।।**

**अन्वयार्थ-सग-सुद्धप्प-गुण-लद्धीए**-स्व शुद्धात्म गुणों की प्राप्ति के लिए **उसहाइ-वीरादो**-ऋषभदेव से आदि लेकर महावीर तक **वट्टमाणस्स**-वर्तमान काल के **सव्वा**-सभी **तित्थयरा**-तीर्थंकरों को **सव्वदा**-सर्वदा **हं**-मैं (आचार्य वसुनंदी मुनि) **पणमामि**-नमस्कार करता हूँ।

**संति-पाय-जयकित्तिं, सूरिं देसभूसणं णमंसामि।**
**सिरिविज्जाणंदगुरुं, जिणसासणमागमं धम्मं।।5।।**

**अन्वयार्थ-सूरिं संति-पाय-जयकित्तिं**-आचार्य श्री शांतिसागर जी, आचार्य श्री पायसागर जी, आचार्य श्री जयकीर्ति जी **सिरिविज्जाणंदगुरुं**-आचार्य श्री विद्यानंद गुरु **जिणसासणमागमं धम्मं**-जिनशासन, जिनागम, जिनधर्म को **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

## ग्रंथ प्रतिज्ञा

**भवकारण-णिवत्तीइ, दुक्खाइं खयेदुं इणं गंथं।**
**वसु-गुणाण संपत्तिं, लहिदुं सुद्धप्पं वोच्छामि।।6।।**

**अन्वयार्थ-भवकारण-णिवत्तीइ**-संसार के कारणों की निवृत्ति के लिए **दुक्खाइं**-दुखों के **खयेदुं**-क्षय के लिए **वसु-गुणाण**-अष्ट गुणों की **संपत्तिं**-संपत्ति को **लहिदुं**-प्राप्त करने के लिए **इणं**-इस **गंथं**-ग्रंथ **सुद्धप्पं**-'सुद्धप्पा' को **वोच्छामि**-कहता हूँ।

## द्विविधात्मा

**अप्पा दुविहो भणिदो, खलु संसारि-मुत्ताण भेयेणं।**
**कम्मजुदा संसारी, कम्मविहीणा सुद्धसिद्धा।।7।।**

**अन्वयार्थ-संसारि-मुत्ताण**-संसारी व मुक्त के **भेयेणं**-भेद से **अप्पा**-आत्मा **दुविहो**-दो प्रकार का **भणिदो**-कहा गया है **खलु**-निश्चय से **कम्मजुदा**-कर्म से युक्त **संसारी**-संसारी **कम्मविहीणा**-व कर्म से विहीन **सुद्धसिद्धा**-शुद्ध सिद्ध हैं।

## त्रिविधात्मा

**संसारी जीवा खलु, तिविहा भणिदागमे जिणवरेहिं।**
**बहिरप्पंतरप्पा य, घाइ-विवज्जिदा परमप्पा।।8।।**

**अन्वयार्थ-जिणवरेहिं**-जिनवरों के द्वारा **आगमे**-आगम में **संसारी जीवा**-संसारी जीव **खलु**-निश्चय से **तिविहा**-तीन प्रकार के **भणिदा**-कहे गए

हैं **बहिरप्पंतरप्पा**-बहिरात्मा, अंतरात्मा **य**-और **घाइ-विवज्जिदा**-घाति कर्मों से विवर्जित **परमप्पा**-परमात्मा।

## दीर्घ संसारी

**मण्णदे देहमप्पा, सो हु बहिरप्पा दिग्घ-संसारी।**
**तस्स चागेणं विणा, अंतरप्प-दसा संभवो ण।।9।।**

**अन्वयार्थ**-(जो)**देहमप्पा**-देह को आत्मा **मण्णदे**-मानता है **सो**-वह **बहिरप्पा**-बहिरात्मा **दिग्घ-संसारी**-दीर्घ संसारी है **य**-और **तस्स**-उसको **चागेणं विणा**-त्याग किए बिना **हु**-निश्चय से **अंतरप्प-दसा**-अंतरात्मा की दशा **संभवो ण**-संभव नहीं है।

## अंतरात्मा

**भेदविण्णाण-सहिदो, देहस्स जीवस्स अंतरप्पा य।**
**उत्तममज्झमजहण्ण-भेयेण तिविहो भणिदो सो।।10।।**

**अन्वयार्थ-देहस्स**-देह **य**-और **जीवस्स**-जीव के **भेदविण्णाण-सहिदो**-भेद विज्ञान से सहित जीव **अंतरप्पा**-अंतरात्मा है **सो**-वह **उत्तममज्झमजहण्ण-भेयेण**-उत्तम, मध्यम व जघन्य के भेद से **तिविहो**-तीन प्रकार का **भणिदो**-कहा गया है।

## बहिरात्मा

**मिच्छत्तादो सम्मा-मिच्छद्दिट्ठी पज्जंतो जीवा।**
**बहिरप्पा अण्णाणी, असमत्था सगकल्लाणम्मि।।11।।**

**अन्वयार्थ-मिच्छत्तादो**-मिथ्यात्व से **सम्मा-मिच्छद्दिट्ठी**-सम्यक् मिथ्यादृष्टि **पज्जंतो**-पर्यंत **जीवा**-जीव **बहिरप्पा**-बहिरात्मा हैं **अण्णाणी**-(ये) अज्ञानी जीव **सगकल्लाणम्मि**-अपना कल्याण करने में **असमत्था**-असमर्थ हैं।

## परमात्मा

**सम्मादिट्ठि-ठाणादु, जे जीवे खीण-मोह-पज्जंतो।**
**ते सव्वे णियमेणं, भावी सिद्धा य परमप्पा।।12।।**

**अन्वयार्थ-जे**-जो **जीवे**-जीव **सम्मादिट्ठि-ठाणादु**-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान से **खीण-मोह-पज्जंतो**-क्षीण मोह गुणस्थान पर्यंत हैं **ते**-वे **सव्वे**-सभी (अंतरात्मा) **णियमेणं**-नियम से **भावी**-भावी **सिद्धा**-सिद्ध **य**-और **परमप्पा**-परमात्मा होते हैं।

## जघन्य अंतरात्मा

**अविरदसम्मादिट्ठी, सम्मत्ताचरण-सहिद-जीवा जे।**
**ते जहण्णंतरप्पा, अप्पयालम्मि होज्ज सिद्धा।।13।।**

**अन्वयार्थ-जे**-जो **सम्मत्ताचरण-सहिदा**-सम्यक्त्वाचरण सहित **अविरदसम्मादिट्ठी**-अविरत सम्यग्दृष्टि **जीवा**-जीव हैं **ते**-वे **जहण्णंतरप्पा**-जघन्य अंतरात्मा हैं व **अप्पयालम्मि**-अल्पकाल में **सिद्धा**-सिद्ध **होज्ज**-होंगे।

## मध्यम अंतरात्मा

**देसवदी णरतिरिया, पमत्तसंजमी मुणिवरा भणिदा।**
**मज्झमंतरप्पा खलु, कम्मं खयित्तु लहेज्ज सिवं।।14।।**

**अन्वयार्थ-देसवदी-णरतिरिया**-देशव्रती नर-तिर्यंच **पमत्तसंजमी**-प्रमत्त-संयमी **मुणिवरा**-मुनिवर **मज्झमंतरप्पा**-मध्यम अंतरात्मा **भणिदा**-कहे गए हैं वे **खलु**-निश्चय से **कम्मं**-कर्म को **खयित्तु**-क्षयकर **सिवं**-मोक्ष **लहेज्ज**-प्राप्त करेंगे।

## उत्कृष्ट अंतरात्मा

**अपमत्तविरदादो हु, खीणकसाय-गुणठाण-पज्जंतो।**
**उक्किट्ठ-अंतरप्पा, ते सिग्घं होंति परमप्पा।।15।।**

**अन्वयार्थ-अपमत्तविरदादो**-अप्रमत्तविरत गुणस्थान से **खीणकसाय**-

**गुणठाण-पज्जंतो**-क्षीणकषाय गुणस्थान पर्यंत **उक्किट्ठ-अंतरप्पा**-उत्कृष्ट अंतरात्मा हैं **ते**-वे **सिग्घं**-शीघ्र **हु**-ही **परमप्पा**-परमात्मा **होंति**-होते हैं।

## अरिहंत

**णिक्कम्मो य सकम्मो, सयलो णियलो दुविहो परमप्पा।**
**णिक्कम्मा ते सिद्धा, सकम्मारिहंत-परमप्पा।।16।।**

**अन्वयार्थ-परमप्पा**-परमात्मा **णिक्कम्मो य**-कर्म रहित और **सकम्मो**-कर्म सहित है अथवा **सयलो**-सकल **णियलो**-व निकल **दुविहो**-दो प्रकार के हैं (जो) **णिक्कम्मा**-निष्कर्म हैं **ते**-वे **सिद्धा**-सिद्ध हैं **सकम्मा**-जो कर्म सहित हैं **अरिहंत-परमप्पा**-वे अरिहंत परमात्मा हैं।

## परमात्म पर्यायवाची

**सुद्धो सिवो अणंतो, अणिहणो महेसरो तहा बंभो।**
**जिणच्चुदो णिव्वाणो, अकम्मो अकंपो अकलो त्ति।।17।।**
**सस्सदो सव्वदंसी, धुवो परमुच्चो सुद्धपज्जायी।**
**जिणिंदो विभु-सयंभू, परमगुरू य अव्वाबाहो।।18।।**
**सव्वण्हू णिम्मलो य, केवली सिद्धो अव्वओ णाणी।**
**अक्खयो विवित्तीसो, पहु-परमेट्ठी परमप्पात्ति।।19।।**

**अन्वयार्थ-सुद्धो**-शुद्ध **सिवो**-शिव **अणंतो**-अनंत **अणिहणो**-अनिधन-(अंत से रहित) **महेसरो**-महेश्वर **बंभो**-ब्रह्म **जिणच्चुदो**-जिन, अच्युत **णिव्वाणो**-निर्वाण **अकम्मो**-अकर्म (कर्म से रहित) **अकंपो**-अकंप **तहा**-तथा **अकलोत्ति**-अकल (देह से रहित) **सस्सदो**-शाश्वत **सव्वदंसी**-सर्वदर्शी **धुवो**-ध्रुव **परमुच्चो**-परम उच्च **सुद्धपज्जायी**-शुद्धपर्यायी **जिणिंदो**-जिनेन्द्र **विभु-सयंभू**-विभु, स्वयंभू **परमगुरू**-परमगुरु **य**-और **अव्वाबाहो**-अव्याबाध **सव्वण्हू**-सर्वज्ञ **णिम्मलो**-निर्मल-(कर्ममल से रहित) **केवली**-केवली **सिद्धो**-सिद्ध **अव्वओ**-अव्यय (अपने अनंत चतुष्टय रूप स्वभाव से च्युत न होने वाला) **णाणी**-ज्ञानी **अक्खयो**-अक्षय **विवित्तीसो**-विविक्त-ईश (कर्मादि के स्पर्श से रहित ईश) **पहु-परमेट्ठी य**-प्रभु और परमेष्ठी **परमप्पात्ति**-ये परमात्मा के नाम हैं।

## रत्नत्रय बल

**बहिरप्पं उज्झित्ता, होच्चंतरप्पं पहुं झायेज्जा।**
**कम्मं खयित्ता होंति, रयणत्तय-बलेण परप्पा।।20।।**

**अन्वयार्थ**-(जो) **बहिरप्पं**-बहिरात्मा को **उज्झित्ता**-त्यागकर **अंतरप्पं होच्चा**-अंतरात्मा होकर **पहुं**-प्रभु को **झायेज्जा**-ध्याते हैं (वे) **रयणत्तय-बलेण**-रत्नत्रय के बल से **कम्मं**-कर्म को **खयित्ता**-क्षयकर **परप्पा**-परात्मा (उत्कृष्ट आत्मा अर्थात् परमात्मा) **होंति**-होते हैं।

## आत्मज्ञान विमुख

**इंदियविसयासत्ता, जे विमुहा ते हु अप्पणाणादो।**
**देहमप्पा मण्णंति, बहिरप्पाणंतसंसारी।।21।।**

**अन्वयार्थ-जे**-जो **इंदियविसयासत्ता**-इंद्रिय विषयों में आसक्त **अप्पणाणादो**-आत्मज्ञान से **विमुहा**-विमुख हैं **देहमप्पा**-देह को आत्मा **मण्णंति**-मानते हैं **ते**-वे **बहिरप्पा**-बहिरात्मा **हु**-निश्चय से **अणंतसंसारी**-अनंत संसारी हैं।

## देह में आत्म बुद्धि

**मोही अण्णाणी खलु, णरदेहं मण्णदे अप्प-रूवो।**
**सुरणेरइयतिरियाण, देहा अवि मण्णदे अप्पा।।22।।**

**अन्वयार्थ-मोही**-मोही **अण्णाणी**-अज्ञानी जीव **खलु**-निश्चय से **णरदेहं**-नर देह को **अप्प-रूवो**-आत्म रूप **मण्णदे**-मानता है **सुरणेरइयतिरियाण**-देव, नारकी, तिर्यंच के **देहा**-शरीरों को **अवि**-भी **अप्पा**-आत्मा **मण्णदे**-मानता है।

## आत्म स्वरूप

**देहे विज्जदि अप्पा, णहि देहो कया वि होदि हु अप्पा।**
**देहो पोग्गलरूवो, ससंवेज्जो अयलो अप्पा।।23।।**

**अन्वयार्थ-अप्पा**-आत्मा **देहे**-देह में **विज्जदि**-विद्यमान रहती है **देहो**-देह

**कया वि**-कभी भी **अप्पा**-आत्मा **णहि**-नहीं **होदि**-होती है **हु**-निश्चय से **देहो**-देह **पुग्गलरूवो**-पुद्गल रूप है (और) **अप्पा**-आत्मा **ससंवेज्जो**-स्वसंवेद्य (स्वानुभवगम्य) व **अयलो**-अचल (अर्थात् अपने स्वभाव से कभी च्युत न होने वाला है)।

**जीवत्तसत्ति-सहिदो, णाणदंसण-चेयणारूवो तह।**
**सामण्णियर-गुण-जुदो, जुदो अप्पाणंतसत्तीइ।।24।।**

**अन्वयार्थ-अप्पा**-आत्मा **णाणदंसणचेयणारूवो**-ज्ञान-दर्शन चेतना रूप है **जीवत्त-सत्ति-सहिदो**-जीवत्व शक्ति से सहित है **सामण्णियर-गुण-जुदो**-सामान्य व इतर (अर्थात् विशेष) गुणों से युक्त **तह**-तथा **अणंतसत्तीइ**-अनंत शक्ति से **जुदो**-युक्त है।

## ज्ञानी-अज्ञानी

**णियदेहं पस्सित्ता, परदेहं अचेयणो पस्सदि जो।**
**सो अवि णाणी अप्पा, देहमप्पा मण्णदि मूढो।।25।।**

**अन्वयार्थ-जो**-जो **णियदेहं**-अपने शरीर को **पस्सित्ता**-देखकर **परदेहं**-दूसरों की देह को **अवि**-भी **अचेयणो**-अचेतन **पस्सदि**-देखता है **सो**-वह **णाणी**-ज्ञानी **अप्पा**-आत्मा है **मूढो**-मूर्ख **देहमप्पा**-देह को आत्मा **मण्णदि**-मानता है।

**अण्णाणं देहेसुं, भवण-वाहण-खेत्त-धण्णादीसुं।**
**जस्स अप्पधी होदि हु, बहिरप्पण्णाणी मूढो य।।26।।**

**अन्वयार्थि-अण्णाणं**-अन्यों की **देहेसुं**-देहों में **भवण-वाहण-खेत्त-धण्णादीसुं**-भवन, वाहन, क्षेत्र, धान्यादि में **जस्स**-जिसकी **अप्पधी**-आत्म बुद्धि **होदि**-होती है (वह) **हु**-निश्चय से **बहिरप्पण्णाणी**-बहिरात्मा, अज्ञानी **य**-और **मूढो**-मूर्ख है।

## अनादि संस्कार

**अणादिसक्कारेणं, मोहाविज्जा-बलेण य सरीरं।**
**मण्णंति अप्परूवो, तं उज्झेदुं णो समत्था।।27।।**

**अन्वयार्थ**-(जीव) **अणादिसक्कारेणं**-अनादि (काल के) संस्कार से **मोहाविज्जा- बलेण य**-मोह व अविद्या के बल से **सरीरं**-शरीर को **अप्परूवो**-आत्म रूप **मण्णंति**-मानते हैं (व) **तं**-उसे **उज्झेदुं**-त्यागने में **णो समत्था**-समर्थ नहीं होते।

## सम्यक्त्व बुद्धि

**अप्पम्मि अप्पबुद्धी, जाणं अजीवे अजीवरूवा य।**
**ते होंति सम्मदिट्ठी, णिय-रूवं लहिदुं समत्था।।28।।**

**अन्वयार्थ**-**जाणं**-जिनकी **अप्पम्मि**-आत्मा में **अप्पबुद्धी**-आत्मबुद्धि व **अजीवे**-अजीव में **अजीवरूवा**-अजीव रूप (बुद्धि) **होदि**-होती है **ते**-वे **सम्मदिट्ठी**-सम्यक् दृष्टि **होंति**-होते हैं व **णिय-रूवं**-निजस्वरूप को **लहिदुं**-प्राप्त करने में **समत्था**-समर्थ हैं।

## मूढ़ बुद्धि

**देहम्मि अप्पबुद्धी, अप्पम्मि य अजीवधारणा जस्स।**
**सो मूढो अण्णाणी, चिरं भुंजदे घोर-दुहाणि।।29।।**

**अन्वयार्थ**-**जस्स**-जिसकी **देहम्मि**-देह में **अप्पबुद्धी**-आत्मबुद्धि **य**-व **अप्पम्मि**-आत्मा में **अजीवधारणा**-अजीव धारणा है **सो**-वह **मूढो**-मूर्ख **अण्णाणी**-अज्ञानी **चिरं**-चिरकाल तक **घोर-दुहाणि**-घोर दुखों को **भुंजदे**-भोगता है।

## अज्ञानी

**मण्णदे देहविद्धिं, अप्पविद्धी देहस्स हाणिं जो।**
**अप्पहाणी सो तहा, लोयम्मि होज्ज कहं णाणी।।30।।**

**अन्वयार्थ**-**जो**-जो **देहविद्धिं**-देह की वृद्धि को **अप्पविद्धी**-आत्मा की वृद्धि **मण्णदे**-मानता है **तहा**-तथा **देहस्स**-देह की **हाणिं**-हानि को **अप्पहाणी**-आत्मा की हानि (मानता है) **सो**-वह **लोयम्मि**-लोक में **णाणी**-ज्ञानी **कहं**-कैसे **होज्ज**-हो सकता है।

## भव-दुख मूल

**देहेसुमप्पबुद्धी, णियमेणं मूलं भवदुक्खाणं।**
**जो उज्झदि तं बुद्धिं, सक्को सो भवदुहं हरिदुं।।31।।**

**अन्वयार्थ-देहेसुं**-देहों में **अप्पबुद्धी**-आत्मबुद्धि (का होना) **णियमेणं**-नियम से **भवदुक्खाणं**-भवदुखों का **मूलं**-मूल है **जो**-जो **तं**-उस **बुद्धिं**-बुद्धि को **उज्झदि**-त्यागता है **सो**-वह **भवदुहं-हरिदुं**-भव दु:ख का हरण (अर्थात् नाश) करने में **सक्को**-समर्थ है।

## सुख कहाँ

**उम्मत्त-मूढ-सुत्तो, जो को वि विसयेसु रज्जदि जीवो।**
**कहं लहेज्ज सुहं तं, उप्पज्जदि जं सुहमप्पम्मि।।32।।**

**अन्वयार्थ-उम्मत्त-मूढ-सुत्तो**-उन्मत्त, मूर्ख, सुप्त **जो को वि**-जो कोई भी **जीवो**-जीव **विसयेसु**-विषयों में **रज्जदि**-रंजायमान होता है (वह) **तं**-उस **सुहं**-सुख को **कहं**-कैसे **लहेज्ज**-प्राप्त कर सकता है **जं**-जो **सुहमप्पम्मि**-सुख आत्मा में **उप्पज्जदि**-उत्पन्न होता है।

## तत्त्वज्ञानी सुखी

**जो विजाणेदि तच्चं, तच्चं मण्णेदि भावेदि तच्चं।**
**उज्झदि सव्व-अतच्चं, सस्सद-सोक्खं सो पावेदि।।33।।**

**अन्वयार्थ-जो**-जो **तच्चं**-तत्त्व को **विजाणेदि**-जानता है **तच्चं**-तत्त्व को **मण्णेदि**-मानता है व **तच्चं**-तत्त्व को **भावेदि**-भाता है (अर्थात् तत्त्व की भावना करता है) **सव्व-अतच्चं**-सर्व अतत्त्व को **उज्झदि**-त्यागता है **सो**-वह **सस्सद-सोक्खं**-शाश्वत सौख्य को **पावेदि**-प्राप्त करता है।

## ज्ञानदीप

**णाणं महापदीवो, जदि सम्मत्त-सुद्धचरित्त-जुत्तं।**
**विसयमोह-पवणेणं, णिव्ववेज्ज खलु तं कया वि ण।।34।।**

**अन्वयार्थ-णाणं**-ज्ञान **महापदीवो**-महाप्रदीप है **जदि**-यदि (वह)

**सम्मत्त-सुद्धचरित्त-जुत्तं**-सम्यक्त्व व शुद्ध चारित्र से युक्त है तो **तं**-उसे **विसयमोह-पवणेणं**-विषय व मोह की पवन के द्वारा **खलु**-निश्चय से **कयावि**-कदापि भी **णिव्ववेज्ज ण**-बुझाया नहीं जा सकता।

## किससे बोलूँ

**जं रूवं हं पस्समि, सो णियमेणं अचेयणो होज्जा।**
**तम्हा केण सह वदमु, चिदरूवं जाणिदुमसक्को।।35।।**

**अन्वयार्थ-जं रूवं**-जिस रूप को **हं**-मैं (इन्द्रियों के द्वारा) **पस्समि**-देखता हूँ **सो**-वह **णियमेणं**-नियम से **अचेयणो**-अचेतन **होज्जा**-होता है **चिदरूवं**-(मैं) चिद्रूप को **जाणिदुं**-जानने के लिए **असक्को**-अशक्य हूँ **तम्हा**-इसीलिए अब मैं **केण सह**-किसके साथ **वदमु**-बोलूँ।

**जं रूवं हं जाणमि, तं सद्देहि जाणेदुं समत्थो।**
**अप्पा सद्दविहीणो, तम्हा हं केण सह वदामु।।36।।**

**अन्वयार्थ-जं**-जिस **रूवं**-रूप को **हं**-मैं **जाणमि**-जानता हूँ **तं**-वह (पुद्गल होने से) **सद्देहि**-शब्दों के द्वारा **जाणेदुं**-जानने में **समत्थो**-समर्थ है (जबकि) **अप्पा**-आत्मा **सद्दविहीणो**-शब्दविहीन है **तम्हा**-इसीलिए **हं**-मैं **केण सह**-किसके साथ **वदामु**-बात करूँ।

**जं सुणिदुं हु समत्थो, ते सद्दा पोग्गला होंति णियमा।**
**सद्दरूवप्पधणी ण, तम्हा हं धारामि मोणं।।37।।**

**अन्वयार्थ**-मैं **जं**-जो **सुणिदुं**-सुनने में **समत्थो**-समर्थ हूँ **ते**-वे **सद्दा**-शब्द **णियमा**-नियम से **पोग्गला**-पुद्गल **हु**-ही **होंति**-होते हैं **सद्दरूवप्पधणी**-आत्मा की ध्वनि शब्द रूप **ण**-नहीं है **तम्हा**-इसीलिए **हं**-मैं **मोणं**-मौन **धारामि**-धारण करता हूँ।

## शुद्धात्म स्वरूप

**जम्ममिच्चुहीणो खलु, संकप्पविहीणो कंखविहीणो।**
**किरियाकंड-विहीणो, वियप्पविहीणो सुद्धप्पा।।38।।**

**अन्वयार्थ-खलु**-निश्चय से **सुद्धप्पा**-शुद्धात्मा **जम्ममिच्चुहीणो**-जन्म-मृत्यु से हीन **संकप्पविहीणो**-संकल्प विहीन **कंखविहीणो**-आकांक्षा विहीन **किरियाकंड-विहीणो**-क्रियाकांड विहीन (और) **वियप्पविहीणो**-विकल्पहीन है।

## आत्म चेष्टा

**अण्णजीवाण दाणं, आदाणं अण्णादो जदि करोमि।**
**चेट्ठा उम्मत्तोव्व हु, अप्पचेट्ठा वियप्पहीणा।।39।।**

**अन्वयार्थ-जदि**-यदि (मैं) **अण्णजीवाण**-अन्य जीवों के लिए **दाणं**-दान **अण्णादो**-अन्यों से **आदाणं**-आदान **करोमि**-करता हूँ (तो वह) **चेट्ठा**-चेष्टा **हु**-निश्चय से **उम्मत्तोव्व**-उन्मत्त के समान है **अप्पचेट्ठा**-आत्मा की चेष्टा **वियप्पहीणा**-विकल्पों से हीन है।

## विपरीत प्रवृत्ति

**जं किंचिवि गहणीयं, तं गहेदुं णेव समत्थो अम्मि।**
**वत्थुं हु चागणीयं, तं उज्झेदुं णो समत्थो।।40।।**

**अन्वयार्थ-हु**-निश्चय से **जं**-जो (वस्तु) **किंचिवि**-किंचित् भी **गहणीयं**-ग्रहण करने योग्य है **अम्मि**-मैं **तं**-उसे **गहेदुं**-ग्रहण करने में **समत्थो**-समर्थ **णेव**-नहीं हूँ **वत्थुं**-(जो) वस्तु **चागणीयं**-त्याग करने योग्य है **तं**-उसे **उज्झेदुं**-त्याग करने में **णो समत्थो**-समर्थ नहीं हूँ।

## अग्राह्य ग्रहण

**जं किंचि गहिदं मए, तं णत्थि मज्झं कहिं वि यालम्मि।**
**णो अहं तस्स वि होमि, णो होहीअ णो हि होहामि।।41।।**

**अन्वयार्थ-जं**-जो **किंचि**-किंचित् **मए**-मेरे द्वारा **गहिदं**-ग्रहण किया गया है **तं**-वह **कहिं वि यालम्मि**-किसी भी काल में **मज्झं**-मेरा **णत्थि**-नहीं है **अहं**-मैं **वि**-भी **तस्स**-उसका **णो**-नहीं **होमि**-हुआ हूँ **णो होहीअ**-न हुआ था **णो हि होहामि**-ना ही होऊँगा।

## शाश्वत स्वत्व

**ण होदि पराण ममप्पा, पराणं णो होसी णो होस्सदि य।**
**मज्झं अप्पा णिच्चं मे, अत्थि आसी होस्सदि मज्झं।।42।।**

**अन्वयार्थ-मम**-मेरी **अप्पा**-आत्मा **पराणं**-दूसरों का **ण**-नहीं **होदि**-होता **पराणं**-दूसरों की **णो होसी**-न हुई थी **य**-और **णो होस्सदि**-न होगी **मज्झं**-मेरी **अप्पा**-आत्मा **णिच्चं**-नित्य **मज्झं**-मेरी **अत्थि**-है **आसी**-(मेरी) थी (और) **होस्सदि**-(मेरी) होगी।

## शाश्वतात्मा

**दंसणणाणसमग्गो, मे अप्पा सस्सदो अप्परूवो।**
**चिम्मय-अमुत्तरूवो, जम्मजरारोयभयहीणो।।43।।**

**अन्वयार्थ-दंसणणाणसमग्गो**-दर्शन व ज्ञान से युक्त **चिम्मय-अमुत्तरूवो**-चिन्मय, अमूर्तरूप **जम्म-जरा-रोय-भय-हीणो**-जन्म, जरा, रोग, भय से विहीन **मे**-मेरी **अप्पा**-आत्मा **सस्सदो**-शाश्वत **अप्परूवो**-आत्म रूप है।

## हेयोपादेय

**स-सहावो गहणीयो, परसहावो सया हि उज्झणीयो।**
**णवरि ण गहेमि विहामि, हेयभावं हा मे दुक्खं।।44।।**

**अन्वयार्थ-स-सहावो**-स्व स्वभाव **गहणीयो**-ग्रहण करने योग्य है **णवरि**-किन्तु **ण गहेमि**-मैं (उसे) ग्रहण नहीं करता **परसहावो**-परस्वभाव **सया हि**-सदा ही **उज्झणीयो**-त्याग करने योग्य है (किन्तु) **हेयभावं**-(मैं उस) हेयभाव को **ण विहामि**-नहीं छोड़ता हूँ **हा**-हाय! **मे दुक्खं**-(ये) मेरा दु:ख है।

## स्वसंवेद्यात्मा

**सगसंवेदण-जोग्गो, अप्पा णियमेणं ठादि अप्पम्मि।**
**अप्पा णो हु गच्छेदि, परदव्वाणि कहंपि कया वि।।45।।**

**अन्वयार्थ-सगसंवेदण-जोग्गो**-स्वसंवदेन के योग्य **अप्पा**-आत्मा

**णियमेणं**-नियम से **अप्पम्मि**-आत्मा में **ठादि**-ठहरता है **हु**-निश्चय से **अप्पा**-आत्मा **कया वि**-कभी भी **कहंपि**-कैसे भी **परदव्वाणि**-परद्रव्यों में **णो गच्छेदि**-नहीं जाता।

## भ्रांति

**जइ उप्पज्जदि भंती, सिप्पि-ठाणूसुं रजद-पुरिसाणं।**
**मरीइयाइ णीरस्स, पित्तलम्मि हाडगस्स तहा।।46।।**
**तदायाले पुरिसस्स, होदि चेट्ठा य उम्मत्तजीवोव्व।**
**णाणीसु हस्सपत्तो, होदि सो तहा सीददि तत्थ।।47।।**

**अन्वयार्थ-जइ**-जब **सिप्पि-ठाणूसुं रजद-पुरिसाणं**-सीप में चाँदी की, स्थाणु में पुरुष की **मरीइयाइ**-मरीचिका में **णीरस्स**-नीर की **तहा**-तथा **पित्तलम्मि**-पीतल में **हाडगस्स**-स्वर्ण की **भंती**-भ्रांति **उप्पज्जदि**-उत्पन्न होती है **तदायाले**-उस समय **पुरिसस्स**-पुरुष की **चेट्ठा**-चेष्टा **उम्मत्त-जीवोव्व**-उन्मत्त जीव के समान **होदि**-होती है **सो**-वह **णाणीसु**-ज्ञानियों में **हस्सपत्तो**-हँसी का पात्र **होदि**-होता है **तहा**-तथा **तत्थ**-वहाँ **सीददि**-दु:खी होता है।

## मिथ्या अन्वेषण

**मोही जीवो मण्णदि, अप्पसरूवं खलु देहादीसुं।**
**अप्प-गुणा अण्णेसदि, तम्हि णो लहेदि किंचि वि ता।।48।।**

**अन्वयार्थ-मोही जीवो**-मोही जीव **देहादीसुं**-देहादि में **अप्पसरूवं**-आत्मा स्वरूप को **मण्णदि**-मानता है **तम्हि**-उसमें **खलु**-निश्चय ही **अप्पगुणा**-आत्म गुणों की **अण्णेसदि**-खोज करता है (और) **ता**-उन (गुणों) को **किंचि वि**-किंचित् भी **णो लहेदि**-प्राप्त नहीं करता।

## सम्यक् प्रवृत्ति

**जदा णस्सदि विब्भमो, तदा मोहिस्स चेट्ठा वरा होदि।**
**तहेव णस्सदि मोहं, णाणीणं सम्मरूवेणं।।49।।**

**अन्वयार्थ-जदा**-जब (मोही जीव का) **विब्भमो**-विभ्रम **णस्सदि**-नष्ट

होता है **तदा**-तब **मोहिस्स**-मोही जीव की **चेट्ठा**-चेष्टा **वरा**-उत्कृष्ट **होदि**-होने लगती है **तहेव**-उसी प्रकार (जब) **मोहं**-मोह **णस्सदि**-नष्ट होता है (अर्थात् देहादि में जब आत्मा का भ्रम दूर हो जाता है तब) **णाणीणं**-इस ज्ञानी पुरुष की (चेष्टा भी) **सम्मरूवेणं**-सम्यक् रूप से होती है।

## परत्व बुद्धि

**अम्मि अणुभूइ-जोग्गो, अप्पम्मि अप्परूवो णियमेणं।**
**सो हं णो णवुंसगो, णो इत्थी णेव पुरिसो वा।।50।।**

**अन्वयार्थ**-**अम्मि**-मैं **णियमेणं**-नियम से **अप्पम्मि**-आत्मा में **अप्परूवो**-आत्मा रूप **अणुभूइ-जोग्गो**-अनुभूति के योग्य हूँ **हं**-मैं **सो**-वह **णो णवुंसगो**-नपुंसक नहीं हूँ **णो इत्थी**-स्त्री नहीं हूँ **वा**-और **णेव पुरिसो**-ना ही मैं पुरुष हूँ।

## जो है सो है

**णाणी णिच्चो अप्पा, चिम्मयो सस्सदो अभेयरूवो।**
**णो एग-बे-ते-चदू, ण संखेज्जसंखेज्जणंतो।।51।।**

**अन्वयार्थ**-मैं **णाणी**-ज्ञानी **णिच्चो**-नित्य **चिम्मयो**-चिन्मय **सस्सदो**-शाश्वत **अभेयरूवो**-अभेदरूप **अप्पा**-आत्मा हूँ **णो एग-बे-ते-चदू**-एक, दो, तीन, चार भी नहीं हूँ **ण संखेज्जसंखेज्जणंतो**-न संख्यात, न असंख्यात और न अनंत हूँ।

## अयथार्थ-प्रवृत्ति

**जम्मि भावम्मि सुत्तो, अम्मि णो तस्सिं जागरेमि पुणो।**
**भावे जागरिओ हं, सो सहावेण ण मे कया वि।।52।।**

**अन्वयार्थ**-**अम्मि**-मैं **जम्मि**-जिस **भावम्मि**-भाव में **सुत्तो**-सुप्त हूँ **तस्सिं**-उसमें (मैं) **पुणो**-पुनः **णो वि जागरेमि**-जागृत नहीं होता **हं**-मैं **भावे**-(जिस) भाव में **जागरिओ**-जागृत हूँ **सो**-वह **सहावेण**-स्वभाव से **कया वि**-कभी भी **मे**-मेरा **ण**-नहीं है।

## गम्यागम्य

**पोग्गलो अक्ख-जोग्गो, अप्पा अगहणीयो इंदियेहिं।**
**तस्स वि णो आहरणो, णो चिण्हं णो को वि उवमा।।53।।**

**अन्वयार्थ-पोग्गलो**-पुद्गल **अक्ख-जोग्गो**-इंद्रियों के योग्य है (अर्थात् इंद्रियों के द्वारा जानने योग्य है और) **अप्पा**-आत्मा **इंदियेहिं**-इंद्रियों के द्वारा **अगहणीयो**-अग्रहणीय (अर्थात् ग्रहण करने योग्य नहीं है) **तस्स**-उसका **को वि**-कोई भी **णो आहरणो**-दृष्टांत नहीं दिया जा सकता **णो चिण्हं**-कोई भी प्रतीक नहीं है (और) **णो उवमा**-कोई उपमा नहीं (दी जा सकती)।

## स्वात्म दर्शन

**खयंति रायद्देसं, सग-कोह-सोग-भय-रदि-हस्साइं।**
**तदा हि अप्पं अप्पा, तच्चेण पस्सिदुं समत्थो।।54।।**

**अन्वयार्थ**-(जब) **सग**-अपने **रायद्देसं**-राग-द्वेष **कोह-सोग-भय-रदि-हस्साइं**-अपने क्रोध, शोक, भय, रति, हास्यादि **खयंति**-नष्ट होते हैं **तदा हि**-तब ही **अप्पा**-आत्मा **अप्पं**-आत्मा को **तच्चेण**-तत्त्व के द्वारा **पस्सिदुं**-देखने के लिए **समत्थो**-समर्थ होता है।

## अमित्र-अशत्रु

**इहलोयम्मि मम णत्थि, मादुपिदुपुत्तकलत्तबंधू तह।**
**कत्थ ण के वि विज्जंति, मे सत्तु-मित्तं इट्ठादी।।55।।**

**अन्वयार्थ-इहलोयम्मि**-इस लोक में **मम**-मेरे **मादुपिदुपुत्तकलत्तबंधू तह**-माता, पिता, पुत्र, कलत्र तथा बंधुवर्ग **णत्थि**-नहीं है (इस लोक में) **कत्थ**-कहीं (भी) **के वि**-कोई भी **मे**-मेरे **सत्तु-मित्तं**-मित्र-शत्रु **इट्ठादी**-इष्टादि **विज्जंति ण**-विद्यमान नहीं हैं।

## समदृष्टि

**णाहं करोमि कया वि, णेह-भावं हु कस्सिं पदत्थम्मि।**
**जे विज्जंति लोगम्मि, तेसु ण करोमि अपिय-भावं।।56।।**

**अन्वयार्थ-अहं**-मैं **कया वि**-कभी भी **कस्सिं पदत्थम्मि**-किसी भी पदार्थ में **णेहभावं**-स्नेह भाव **ण करोमि**-नहीं करता हूँ **जे**-जो भी पदार्थ **लोगम्मि**-लोक में **विज्जंति**-विद्यमान हैं **हु**-निश्चय से (मैं) **तेसु**-उनमें **अपिय-भावं**-अप्रिय भाव को (भी) **ण करोमि**-नहीं करता।

## अदृश्य स्वत्व

**जं जं पस्समि लोगे, सो सो णत्थि मे सत्तू मित्तं च।**
**जं णाहं पस्सामि य, सो वि मे सत्तू मित्तं णो।।57।।**

**अन्वयार्थ-जं जं**-जिस-जिसको (मैं) **लोगे**-लोक में **पस्समि**-देखता हूँ **सो सो**-वह-वह **मे**-मेरा **सत्तू**-शत्रु **च**-और **मित्तं**-मित्र **णत्थि**-नहीं है **य**-और **जं**-जिसे **णाहं**-मैं नहीं **पस्सामि**-देखता **सो वि**-वह भी **मे**-मेरा **सत्तू**-शत्रु **मित्तं**-मित्र **णो**-नहीं है।

## परम पद क्रम

**चयिय बहिरप्प-भावा, ठादुमंतरप्पे करेज्ज कज्जं।**
**परमप्पं झायेज्जा, सव्व-वियार-विसज्जेदुं च।।58।।**

**अन्वयार्थ-बहिरप्प-भावा**-बहिरात्मा के भावों को **चयिय**-त्यागकर **अंतरप्पे**-अंतरात्मा में **ठादुं**-स्थित रहने के लिए **कज्जं**-कार्य **करेज्ज**-करना चाहिए **च**-और **सव्व-वियार-विसज्जेदुं**-मोहादि सर्व विकारों के विसर्जन के लिए **परमप्पं**-परमात्मा को **झायेज्जा**-ध्याना चाहिए।

## शुद्धात्म चिंतन

**जो सुद्धप्पा सो हं, णिच्छयेणं जिणेहिं णिद्दिट्ठं।**
**सक्कार-थिरिमाए, एरिसिं भावं भावेज्जा।।59।।**

**अन्वयार्थ-जो**-जो **सुद्धप्पा**-शुद्धात्मा है **सो हं**-वही मैं हूँ **णिच्छयेणं**-निश्चय से **जिणेहिं**-जिनों के द्वारा **णिद्दिट्ठं**-(ऐसा) निर्दिष्ट किया गया है **सक्कार-थिरिमाए**-संस्कारों की स्थिरता के लिए **एरिसिं**-ऐसी ही **भावं**-भावना **भावेज्जा**-भानी चाहिए।

## परमात्म स्थिति

**तदा अप्पा अप्पम्मि, थिरं होच्चा लहदि परमप्प-ठिदिं।**
**जदा होंति दढिभूदा, सक्कारा परमप्प-रूवा।।60।।**

**अन्वयार्थ-जदा**-जब **परमप्प-रूवा**-परमात्म रूप **सक्कारा**-संस्कार **दढि भूदा**-दृढ़िभूत **होंति**-होते हैं **तदा**-तब **अप्पा**-आत्मा **अप्पम्मि**-आत्मा में **थिरं**-स्थिर **होच्चा**-होकर **परमप्प-ठिदिं**-परमात्म स्थिति को **लहदि**-प्राप्त करता है।

## भय व निर्भय

**बहिरप्पा सद्दहेदि, तत्थ अंतरप्पा खलु कया णो वि।**
**बहिरप्पा भयभीदो, अंतो लहदि णिब्भय-ठाणं।।61।।**

**अन्वयार्थ**-(जहाँ) **बहिरप्पा**-बहिरात्मा **सद्दहेदि**-श्रद्धान करता है **तत्थ**-वहाँ **अंतरप्पा**-अंतरात्मा **खलु**-निश्चय से **कया वि णो**-कभी भी (श्रद्धान) नहीं करता **बहिरप्पा**-बहिरात्मा **भयभीदो**-भयभीत होता है (व) **अंतो**-अंतरात्मा **णिब्भय-ठाणं**-निर्भय स्थान को **लहदि**-प्राप्त करता है।

## अतीन्द्रिय दृष्टि

**होच्चा वियप्पहीणं, जदा पस्समि परमप्परूवो हं।**
**अक्ख-णिग्गहं किच्चा, चित्ते मणमेगग्गं किच्चु।।62।।**

**अन्वयार्थ-वियप्पहीणं**-विकल्पहीन **होच्चा**-होकर **अक्ख-णिग्गहं**-इंद्रियों का निग्रह **किच्चा**-करके **चित्ते**-चित्त में **मणमेगग्गं**-मन को एकाग्र **किच्चु**-करके **जदा**-जब **पस्समि**-मैं देखता हूँ (तब वह) **परमप्परूवो**-परमात्म रूप **हं**-मैं हूँ।

## पूज्य कौन

**जो परमप्पा सो हं, जो हं सो सत्तिरूव-परमप्पा।**
**तम्हा हं मइ पुज्जो, अप्पमप्पे ठाएज्ज सया।।63।।**

**अन्वयार्थ-जो**-जो **परमप्पा**-परमात्मा है **सो**-वह **हं**-मैं हूँ **जो**-जो **हं**-मैं हूँ

**सो**-वह **सत्तिरूव-परमप्पा**-शक्ति रूप परमात्मा है **तम्हा**-इसीलिए **हं**-मैं **मइ**-मेरे द्वारा **पुज्जो**-पूज्य हूँ **अप्पं**-आत्मा को **सया**-सदा **अप्पे**-आत्मा में **ठाएज्ज**-रहना चाहिए।

## स्वात्म दर्शन

**पावमि परमाणंदं, जो जणदे सया अप्पणाणादो।**
**सो णिप्पज्जदि अप्पे, पस्समि अप्पं सया तम्हा।।64।।**

**अन्वयार्थ**-(मैं उस) **परमाणंदं**-परमानंद को **पावमि**-प्राप्त करता हूँ **जो**-जो **सया**-सदा **अप्पणाणादो**-आत्म ज्ञान से **जणदे**-उत्पन्न होता है **सो**-वह **अप्पे**-आत्मा में **णिप्पज्जदि**-निष्पन्न होता है **तम्हा**-इसीलिए (मैं) **सया**-सदा **अप्पं**-आत्मा को **पस्समि**-देखता हूँ।

## आत्म रमण

**उज्झित्तु अण्ण-भावा, सव्वदा अप्पमप्पे थिरं किच्चु।**
**होज्जा हं परमप्पा, संजम-तव-झाण-बलेहिं च।।65।।**

**अन्वयार्थ**-**अण्ण-भावा**-अन्य भावों को **उज्झित्तु**-छोड़कर **सव्वदा**-सदा **अप्पं**-आत्मा को **अप्पे**-आत्मा में **थिरं**-स्थिर **किच्चु**-करके **संजम-तव-झाण-बलेहिं च**-संयम, तप व ध्यान के बल से **हं**-मैं **परमप्पा**-परमात्मा **होज्जा**-होता हूँ।

## स्वात्मोपलब्धि कैसे

**जो णहि जाणदि अप्पं, तणाइ-पदत्थादो भिण्णरूवं।**
**सो लहेज्ज कहमप्पं, कुव्वंतो अणसणाइ-तवं।।66।।**

**अन्वयार्थ**-**जो**-जो **तणाइ-पदत्थादो**-शरीरादि पदार्थों से **भिण्णरूवं**-भिन्न रूप **अप्पं**-आत्मा को **णहि**-नहीं **जाणदि**-जानता **सो**-वह **अणसणाइ-तवं**-अनशनादि तप **कुव्वंतो**-करते हुए (भी) **कहं**-किस प्रकार **अप्पं**-आत्मा को **लहेज्ज**-प्राप्त कर सकता है।

## मोक्षाधिकारी

**जो अप्पं जाणेदि हु, सगगुणपज्जयसहिदं वयहीणं।**
**सो लहेदि णिव्वाणं, खयिच्चु दव्व-भाव-कम्माणि।।67।।**

**अन्वयार्थ-जो**-जो **सगगुणपज्जयसहिदं**-स्वगुण पर्याय से सहित **वयहीणं**-व्यय से हीन **अप्पं**-आत्मा को **जाणेदि**-जानता है **सो**-वह **हु**-निश्चय से **दव्व-भाव-कम्माणि**-द्रव्य-भाव कर्मों को **खयिच्चु**-क्षय करके **णिव्वाणं**-निर्वाण **लहेदि**-प्राप्त करता है।

## समत्व

**सहावरूवाणंदं, लहेदि अप्पदेहंतरणाणेण।**
**जोगी ण सीददि किंचि, पावकम्माणि भुंजंतो वि।।68।।**

**अन्वयार्थ-जोगी**-योगी **अप्पदेहंतरणाणेण**-आत्मा व देह के अंतर ज्ञान (भेद विज्ञान) के द्वारा **पावकम्माणि**-पाप कर्मों को **भुंजंतो वि**-भोगता हुआ भी **किंचि**-किंचित् **ण सीददि**-दु:खी नहीं होता (और) **सहावरूवाणंदं**-स्वभाव रूप आनंद को **लहेदि**-प्राप्त करता है।

## चंचल चित्त

**जावदु चित्ते विज्जदि, रायाइ-मोहुप्पण्णो वियारो।**
**पस्सिदुं णियसरूवं, जह चंचल-जले को सक्को।।69।।**

**अन्वयार्थ-जावदु**-जब तक **रायाइ-मोहुप्पण्णो**-रागादि मोह से उत्पन्न **वियारो**-विकार **चित्ते**-चित्त में **विज्जदि**-विद्यमान है (तब तक) **णियसरूवं**-निज स्वरूप को **पस्सिदुं**-देखने में **को**-कौन **सक्को**-समर्थ है **जह**-जैसे **चंचल-जले**-चंचल नीर में (मुख देखने में कौन समर्थ हो सकता है)।

## दृश्यमान कब

**णाणा-उम्मि-संजुदे, उब्बिंबले उब्भुआण-णीरम्मि।**
**पस्सेदुं णियवदणं, को माणुसो होदि समत्थो।।70।।**

**अन्वयार्थ-को**-कौन **माणुसो**-मनुष्य **णाणा-उम्मि-संजुदे**-बहुत तरंगो से युक्त **उब्बिंबले**-मैले जल में (या) **उब्भुआण-णीरम्मि**- उबलते हुए जल में **णियवदणं**-अपने मुख को **पस्सेदुं**-देखने में **समत्थो**-समर्थ **होदि**-होता है।

## स्वात्म दर्शन कब

**उम्मिरहिदामलजले, णिअच्छिदुं जह पडिबिंबं णियगं।**
**तह णिम्मले चित्तम्मि, पस्सिदुमप्पप्पं सक्केदि।।71।।**

**अन्वयार्थ-जह**-जिस प्रकार मनुष्य **उम्मिरहिदामलजले**-तरंगों से रहित स्वच्छ जल में **णियगं**-अपने **पडिबिंबं**-प्रतिबिंब को **णिअच्छिदुं**-देखने में **सक्केदि**-समर्थ होता है **तह**-उसी प्रकार वह **णिम्मले चित्तम्मि**-निर्मल चित्त में **अप्पं**-अपनी आत्मा को **अप्पा**-आत्मा **पस्सिदुं**-देखने में (समर्थ होता है)।

## शुभाशुभ चित्त

**रुद्दट्टज्झाणजुदे, भमुप्पज्जदि संकिलेसिद-मणम्मि।**
**संसयमोहाइ-रहिद-चित्ते होदि धम्मज्झाणं।।72।।**

**अन्वयार्थ-रुद्दट्टज्झाणजुदे**-आर्त-रौद्र ध्यान युक्त **संकिलेसिद-मणम्मि**-संक्लेशित मन में **भमुप्पज्जदि**-भ्रम उत्पन्न होता है (व) **संसयमोहाइ-रहिद-चित्ते**-संशय मोहादि से रहित चित्त में **धम्मज्झाणं**-धर्मध्यान **होदि**-होता है।

## मोही निर्मोही

**मोहि-जणाणं चित्तं, खुब्भदि माणावमाण-भावेणं।**
**बे-भावेसु समत्तं, जीवा धारंति णिम्मोही।।73।।**

**अन्वयार्थ-मोहि-जणाणं**-मोही जनों का **चित्तं**-चित्त **माणावमाण-भावेणं**-मान व अपमान के भाव द्वारा **खुब्भदि**-क्षुब्ध होता है **णिम्मोही**-निर्मोही **जीवा**-जीव **बे-भावेसु**-दोनों भावों में **समत्तं**-समता भाव **धारंति**-धारण करते हैं।

## मोह विलय

**सुद्धप्प-चिंतणेणं, हवेदि तम्हि एव ठिदिकरणेणं।**
**मोहो खयेदि सिग्घं, जोगीणं चित्त-णिरोहो य।।74।।**

**अन्वयार्थ-सुद्धप्प-चिंतणेणं**-शुद्धात्मा के चिंतन से व **तम्हि एव**-उसमें ही **ठिदिकरणेणं**-स्थितिकरण (अर्थात् रहने) से **जोगीणं**-योगियों के **चित्त-णिरोहो**-चित्त का निरोध **हवेदि**-होता है **य**-और **मोहो**-मोह **सिग्घं**-शीघ्र **खयेदि**-नष्ट होता है।

## विज्ञ प्रवृत्ति

**रज्जदि जम्मि भावम्मि, णाणी मोही णो रज्जदे तम्मि।**
**जत्थ रज्जदे मोही, णाणी तं णासदे सया हि।।75।।**

**अन्वयार्थ-जम्मि भावम्मि**-जिस भाव में **णाणी**-ज्ञानी **रज्जदि**-रंजायमान होता है **मोही**-मोही **तम्मि**-उस भाव में **णो रज्जदे**-रंजायमान नहीं होता तथा **जत्थ**-जहाँ **मोही**-मोही जीव **रज्जदे**-रंजायमान होता है **तं**-उस भाव को **णाणी**-ज्ञानी **सया**-सदा **हि**-ही **णासदे**-नष्ट करता है।

## तत्त्वज्ञान

**दुक्ख-कारणं मोहं, णासदि जोगी तच्चचिंतणेणं।**
**विणा तच्चणाणेणं, को वि ण सक्कदि सिवं लहिदुं।।76।।**

**अन्वयार्थ-जोगी**-योगी **तच्चचिंतणेणं**-तत्त्व चिंतन के द्वारा **दुक्ख-कारणं**-दुख के कारण **मोहं**-मोह को **णासदि**-नष्ट करता है **तच्चणाणेणं विणा**-तत्त्वज्ञान के बिना **को वि**-कोई भी **सिवं**-मोक्ष **लहिदुं**-प्राप्त करने में **ण सक्कदि**-समर्थ नहीं होता।

## स्वस्थिति

**कसायभाव-खयेदुं, विरत्ति-भाव-वड्ढिदुं विसयादो।**
**णाणी सहावे ठादि, सहजुप्पण्णतच्चणाणेण।।77।।**

**अन्वयार्थ-कसाय-भाव-खयेदुं**-कषाय भावों के क्षय के लिए व

**विसयादो**-विषयों से **विरत्ति-भाव-वड्ढिदुं**-विरक्ति भाव के वर्द्धन के लिए **णाणी**-ज्ञानी **सहजुप्पण्णतच्चणाणेण**-सहजोत्पन्न तत्त्व ज्ञान के द्वारा **सहावे**-स्वभाव में **ठादि**-ठहरता है (स्थिर रहता है)।

## अयोग दशा

**चुदो सगसहावत्तो, जीवो बंधेदि विउलकम्माइं।**
**अच्चुदो सगप्पादो, लहदि णियप्पं अजोगेहिं।।78।।**

**अन्वयार्थ-खलु**-निश्चय से **सगसहावत्तो**-अपने स्वभाव से **चुदो**-च्युत **जीवो**-जीव **विउलकम्माइं**-विपुल कर्मों को **बंधेदि**-बाँधता है (व) **सगप्पादो अच्चुदो**-निज आत्मा से अच्युत (आत्म में स्थिर रहने वाला) **अजोगेहिं**-अयोगों के द्वारा **णियप्पं**-निज आत्मा को **लहदि**-प्राप्त करता है।

## अलिंग आत्मा

**दंसणजोगतणाइं, पेक्खित्ता अप्पं तिलिंगरूवो।**
**मूढो तच्चणाणी य, मण्णदि अप्पं लिंगहीणो।।79।।**

**अन्वयार्थ-मूढो**-मूर्ख **दंसणजोगतणाइं**-दर्शन, योग, देहादि को **पेक्खित्ता**-देखकर **अप्पं**-आत्मा को **तिलिंगरूवो**-तीन लिंग रूप **मण्णदि**-मानता है **य**-और **जोगी**-योगी **तच्चणाणी**-तत्त्वज्ञानी **अप्पं**-आत्मा को **लिंगहीणो**-लिंग हीन (मानता है)।

## पूर्व संस्कार

**सुद्धप्पं जाणंतो, तच्चणाण-झाणाण य बलेणं वि।**
**पुव्वसक्कारबलेण, संजमी चुदे सहावादो।।80।।**

**अन्वयार्थ-संजमी**-संयमी **तच्चणाण-झाणाण य**-तत्त्वज्ञान और ध्यान के **बलेणं**-बल से **सुद्धप्पं**-शुद्धात्मा को **जाणंतो**-जानता हुआ **वि**-भी **पुव्वसक्कार-बलेण**-पूर्व संस्कारों के बल से **सहावादो**-स्वभाव से **चुदे**-च्युत होता है।

## संस्कार क्षय

**तच्चचिंतणं कुणेह, पुणो पुणो पुव्वसक्कारखयिदुं।**
**संजमझाणेहि होंति, थिरा हु परमप्प-सक्कारा।।81।।**

**अन्वयार्थ-पुव्वसक्कारखयिदुं**-पूर्व संस्कारों के क्षय के लिए **पुणो-पुणो**-पुनः पुनः **तच्चचिंतणं**-तत्त्व चिंतन **कुणेह**-करना चाहिए **हु**-निश्चय से **संजमझाणेहि**-संयम व ध्यान से **परमप्प-सक्कारा**-परमात्मा के संस्कार **थिरा**-स्थिर **होंति**-होते हैं।

## चेतन-अचेतन

**णत्थि चेयणाजीवो, अजीवो वि चेयणो णत्थि कया वि।**
**जीवो चेयणाजुदो, सस्सदाचेयणो अजीवो।।82।।**

**अन्वयार्थ-चेयणाजीवो**-चेतन अजीव **णत्थि**-नहीं है (तथा) **अजीवो वि**-अजीव भी **कया वि**-कभी भी **चेयणो**-चेतन **णत्थि**-नहीं है **जीवो**-जीव **चेयणाजुदो**-चेतना युक्त है **अजीवो**-अजीव **सस्सदाचेयणो**-शाश्वत अचेतन है।

## हित-अहित

**पोग्गलो दिस्समाणो, चेयणाइ हिदं करिदुमसमत्थो।**
**चेयणादिस्समाणा, सक्का चेयण-हिदं करिदुं।।83।।**

**अन्वयार्थ-दिस्समाणो**-दृश्यमान **पोग्गलो**-पुद्गल **चेयणाइ**-चेतना का **हिदं**-हित **करिदुं**-करने में **असमत्थो**-असमर्थ है **अदिस्समाणा**-अदृश्यमान **चेयणा**-चेतना (ही) **चेयण-हिदं**-चेतना का हित **करिदुं**-करने में **सक्का**-समर्थ है।

## हित सामर्थ्य

**पोग्गल-विजादिरूवो, णत्थि मज्झं केण वि उवायेणं।**
**करिदुमप्पसुहासुहं, ममं विणा ण को वि समत्थो।।84।।**

**अन्वयार्थ-पोग्गल-विजादिरूवो**-पुद्गल विजातिरूप है (वह)

**केण वि**-किसी भी **उवायेणं**-उपाय से **मज्झं**-मेरा **णत्थि**-नहीं है **अप्पसुहासुहं**-आत्मा का शुभाशुभ **करिदुं**-करने में **ममं विणा**-मेरे बिना **को वि**-कोई भी **ण समत्थो**-समर्थ नहीं है।

## इंद्रियागोचर

**होज्ज मे दिस्समाणो, पोग्गलाचेयणो चेयणादिट्ठा।**
**किण्णाहं पोग्गलेहि, रुट्ठं तुट्ठं कया होज्जा।।85।।**

**अन्वयार्थ-पोग्गलाचेयणो**-पुद्गल अचेतन है **मे**-मेरे द्वारा **दिस्समाणो**-दृश्यमान **होज्ज**-हो सकता है (किंतु मेरी) **चेयणादिट्ठा**-चेतना अदृष्ट है (तब) **हं**-मैं **किण्णा**-कैसे **कया**-कभी **पोग्गलेहि**-पुद्गलों के द्वारा **रुट्ठं तुट्ठं होज्जा**-रुष्ट तुष्ट हो सकता हूँ।

## त्याज्य-अत्याज्य

**गहदे मूढप्पा खलु, बहि-पदत्था तहा ता हि उज्झेदि।**
**गहदि मुअदि बहि-अत्था, णज्झप्पणाण-जुदो जोगी।।86।।**

**अन्वयार्थ-मूढप्पा**-मूढ़ात्मा **बहि-पदत्था**-बाह्य पदार्थों को **गहदे**-ग्रहण करता है **तहा**-तथा **ता**-उनको **हि**-ही **उज्झेदि**-छोड़ता है **खलु**-निश्चय से **अज्झप्पणाण-जुदो**-अध्यात्म ज्ञान से युक्त **जोगी**-योगी **बहि-अत्था**-बाह्य अर्थों (पदार्थों) को **ण**-न **गहदि**-ग्रहण करता है **मुअदि**-(न) छोड़ता है।

## तत्त्वज्ञ प्रवृत्ति

**सण्णाणी जदणेणं, आमुयदि सव्व-विहावं वियारं।**
**उप्पज्जेदि अप्पम्मि, तेण सहावो अप्पणाणं।।87।।**

**अन्वयार्थ-सण्णाणी**-सम्यक्ज्ञानी **सव्व-विहावं**-सर्व विभाव **वियारं**-विकार का **जदणेणं**-यत्नपूर्वक **आमुयदि**-त्याग करता है (तथा) **तेण**-उससे **अप्पम्मि**-आत्मा में **अप्पणाणं**-आत्म ज्ञान व **सहावो**-स्वभाव **उप्पज्जेदि**-उत्पन्न होता है।

## सहज वृत्ति

**सरीरेण वयणेणं, ववहारं करेदि जोगी णाणी।**
**मणसा णो हु परिलीदि, भववड्ढग-ववहारम्मि सो।।88।।**

**अन्वयार्थ-जोगी**-योगी **णाणी**-ज्ञानी **सरीरेण**-शरीर के द्वारा **वयणेणं**-वचन के द्वारा **ववहारं**-व्यवहार **करेदि**-करता है **हु**-निश्चय ही **सो**-वह **भववड्ढग-ववहारम्मि**-भववर्द्धक व्यवहार में **मणसा**-मन से **णो परिलीदि**-लीन नहीं होता है।

## लोक प्रवृत्ति

**सया जगं संपुण्णं, विस्ससदे चिय परिलीदि रज्जेदि।**
**देहाइ-परदव्वेसु, मण्णित्तु सुह-कारणं ताणि।।89।।**

**अन्वयार्थ-संपुण्णं**-संपूर्ण **जगं**-जगत् **ताणि**-उन (देहादि पर द्रव्यों को) **सुह-कारणं**-सुख का कारण **मण्णित्तु**-मानकर **देहाइ-परदव्वेसु** देहादि पर द्रव्यों में **चिय**-ही **सया**-सदा **विस्ससदे**-विश्वास करता है **परिलीदि**-लीन रहता है व **रज्जेदि**-रंजायमान होता है।

## आत्मदृष्टा

**विस्ससदे सगप्पम्मि, होदि जस्सप्पदिट्ठी णिच्चं सो।**
**तस्सिं रज्जेदि तहा, तं हि भावेदि अप्पणाणी।।90।।**

**अन्वयार्थ-जस्स**-जिसकी **अप्पदिट्ठी**-आत्मदृष्टि **होदि**-होती है **सो**-वह **अप्पणाणी**-आत्मज्ञानी **णिच्चं**-नित्य **सगप्पम्मि**-अपनी आत्मा में **विस्ससदे**-विश्वास करता है **तस्सिं**-उसमें **रज्जेदि**-रंजायमान होता है **तहा**-तथा **तं**-उसकी **हि**-ही **भावेदि**-भावना करता है।

## अक्षुब्ध चित्त

**मणसि ण धारदे चिरं, जोगी अण्णकज्जमप्प-भावादु।**
**देहवयणेहि मेत्तं, कयाचि सो कुणदि ववहारं।।91।।**

**अन्वयार्थ-जोगी**-योगी **चिरं**-लंबे समय तक **अप्पभावादु**-आत्म भाव

से पृथक् **अण्णकज्जं**-अन्य कार्य को **मणसि**-मन में **ण धारदे**-धारण नहीं करता **कयाचि**-कदाचित् **मेत्तं**-मात्र **देहवयणेहि**-देह और वचनों से **सो**-वह **ववहारं**-व्यवहार **कुणदि**-करता है।

## शाश्वत ज्योति

**अक्खेहि जाणामि जं, कत्थ वि याले सो णो मे कया वि।**
**पस्समि अतिंदियप्पं, सस्सदजोदी उत्तमो सो।।92।।**

**अन्वयार्थ-जं**-जिसे (मैं) **अक्खेहि**-इंद्रियों से **जाणामि**-जानता हूँ **सो**-वह **कत्थ वि याले**-किसी भी काल में **कया वि**-कभी भी **मे**-मेरा **णो**-नहीं है (मैं) **अतिंदियप्पं**-अतीन्द्रिय आत्मा को **पस्समि**-देखता हूँ **सो**-वह **उत्तमो**-उत्तम **सस्सदजोदी**-शाश्वत ज्योति है।

## ध्येय

**णाणदंसणसत्तीण, सस्सदाणंदस्स हु कारणं जो।**
**सो अप्पा हं णिच्चं, तं हि भावेज्जा झायेज्जा।।93।।**

**अन्वयार्थ-हु**-निश्चय से **जो**-जो **णाणदंसणसत्तीण**-ज्ञान, दर्शन, शक्ति का व **सस्सदाणंदस्स**-शाश्वत आनंद का **कारणं**-कारण है **सो**-वह **अप्पा**-आत्मा **णिच्चं**-नित्य **हं**-मैं हूँ **तं**-ऐसी आत्मा की **हि**-ही **भावेज्जा**-भावना करनी चाहिए (व उसका ही) **झायेज्जा**-ध्यान करना चाहिए।

## ग्राह्य

**जाइ खयदि अण्णाणं, तच्चणाणं जादि अप्पदेसम्मि।**
**गहणीयं विज्जं तं, पुच्छेज्ज हि कहेज्ज पस्सेज्ज।।94।।**

**अन्वयार्थ-जाइ**-जिसके द्वारा **अण्णाणं**-अज्ञान **खयदि**-नष्ट होता है **अप्पदेसम्मि**-आत्म प्रदेश में **तच्चणाणं**-तत्त्वज्ञान **जादि**-उत्पन्न होता है **तं**-उस **गहणीयं**-ग्रहण करने योग्य **विज्जं**-विद्या को **हि**-ही **पुच्छेज्ज**-पूछना चाहिए **कहेज्ज**-कहना चाहिए (और) **पस्सेज्ज**-देखना चाहिए।

## संयम-सुख

**जो अप्पणाणसुहादु, बहिरभूदो चिम्मयाइ-णिहीए।**
**सो अणुभवेदि दुक्खं, संजमे णवरि णाणी सुहं।।95।।**

**अन्वयार्थ-जो**-जो **अप्पणाणसुहादु**-आत्मा के ज्ञान सुख **चिम्मयाइ-णिहीए**-और चिन्मयादि निधि से **बहिरभूदो**-बहिर्भूत (बाह्य) है **सो**-वह **संजमे**-संयम में **दुक्खं**-दुख का **अणुभवेदि**-अनुभव करता है **णवरि**-किंतु विशेषता यह है कि **णाणी**-ज्ञानी (आत्मा के ज्ञान, सुख, चिन्मयादि निधि को जानने वाला उसमें अंतर्भूत ज्ञानी संयम में सदा) **सुहं**-सुख का (अनुभव करता है)।

## अतत्त्ववेत्ता

**अप्पा सुक्खसायरो, सया वयणेहिं वददि अण्णाणी।**
**ण चिंतदि तहेव किण्णु, मण्णदे अप्पदेहमेगो।।96।।**

**अन्वयार्थ-अप्पा**-आत्मा **सुक्खसायरो**-सुख का सागर है **अण्णाणी**-अज्ञानी **वयणेहिं**-वचनों के द्वारा **सया**-सदा **वददि**-(ऐसा) कहता है **किण्णु**-किंतु **तहेव**-उस प्रकार का **ण चिंतदि**-चिंतन नहीं करता वह **अप्पदेहं**-आत्मा व देह को **एगो**-एक (ही) **मण्णदे**-मानता है।

## मोही वृत्ति

**अप्पसरूवम्मि हि जो, भंतो मणदे देहं अप्पा सो।**
**तम्हा तप्पदि देहं, मूढो ण णासेदि कम्माणि।।97।।**

**अन्वयार्थ-जो**-जो **अप्पसरूवम्मि**-आत्मस्वरूप में **भंतो**-भ्रांत है **सो**-वह **मूढो**-मूर्ख **देहं**-देह को **हि**-ही **अप्पा**-आत्मा **मणदे**-मानता है **तम्हा**-इसीलिए मात्र **देहं**-देह को **तप्पदि**-तपाता है **कम्माणि**-(आत्मा में विद्यमान) कर्मों को **णासेदि ण**-नष्ट नहीं करता।

## निर्भ्रान्त दृष्टि

**अप्पसरूवे जो सो, अब्भंतो मण्णदि अप्पमप्पम्मि।**
**तप्पदे तिजोगेहिं, तस्सप्पा होदि खलु सुद्धो।।98।।**

**अन्वयार्थ-जो**-जो **अप्पसरूवे**-आत्म स्वरूप में **अब्भंतो**-अभ्रांत है **सो**-वह **अप्पमप्पम्मि**-आत्मा को आत्मा में (नित्य) **मण्णादि**-मानता है **तिजोगेहिं**-(वह) तीनों योगों से **तप्पदे**-तप करता है पुनः **तस्स**-उसकी **अप्पा**-आत्मा **खलु**-निश्चय से **सुद्धो**-शुद्ध **होदि**-होती है।

## विषयासक्त

**सगप्पहिदं णो होदि, कया वि कस्सिं वि इंदियत्थेहिं।**
**तया वि रमदे मूढो, साणोव्व इंदिय-विसयेसुं।।99।।**

**अन्वयार्थ-इंदियत्थेहिं**-इंद्रिय और पदार्थों के द्वारा **कया वि**-कभी भी **कस्सिं वि**-कहीं भी **सगप्पहिदं**-अपनी आत्मा का हित **णो**-नहीं **होदि**-होता **तया वि**-तब भी **मूढो**-मूर्ख प्राणी **साणोव्व**-श्वान के समान **इंदिय-विसयेसुं**-इंद्रिय विषयों में **रमदे**-रमण करता है।

## विषयोन्मुखी

**सुत्तो अण्णाणेणं, भमदि कुजोणीसु अणाइयालादु।**
**णो जागरदि सहावे, पोग्गलदव्वेसु सया रमदि।।100।।**

**अन्वयार्थ-अणाइयालादु**-अनादिकाल से **सुत्तो**-सोया हुआ मूर्ख **अण्णाणेणं**-अज्ञान से **कुजोणीसु**-कुयोनियों में **भमदि**-भ्रमण करता है वह **सहावे**-स्वभाव में **णो जागरदि**-जागृत नहीं होता व **सया**-सदा **पोग्गलदव्वेसु**-पुद्गल द्रव्यों में **रमदि**-रमण करता है।

## अनात्म रुचि

**सुत्तस्सप्पसहावे, जागरिदस्स अण्णदव्व-सहावे।**
**रुच्चदि अणप्पदव्वं, ण कया सुद्धप्पं मूढस्स।।101।।**

**अन्वयार्थ-अप्पसहावे**-आत्म स्वभाव में **सुत्तस्स**-सुप्त **अण्णदव्व-सहावे**-अन्य द्रव्यों के स्वभाव में **जागरिदस्स**-जागृत **मूढस्स**-मूर्ख को **अणप्पदव्वं**-अनात्म द्रव्य **रुच्चदि**-रुचिकर लगता है **कया**-कभी भी **सुद्धप्पं**-शुद्धात्मा **ण**-रुचिकर नहीं लगता।

## शुद्धात्माकांक्षी

**पस्सेज्जा सुद्धप्पं, अप्पस्सप्पम्मि सया अप्पेणं।**
**णियसुद्धप्पाकंखी, रुच्चेज्जा अण्णदव्वाइं।।102।।**

**अन्वयार्थ-णियसुद्धप्पाकंखी**-निज शुद्धात्मा के आकांक्षी को **सया**-सदा **अप्पस्स**-आत्मा के लिए **अप्पम्मि**-आत्मा में **अप्पेणं**-आत्मा के द्वारा **सुद्धप्पं**-शुद्धात्मा को **पस्सेज्ज**-देखना चाहिए (उसे) **अण्णदव्वाइं**-अन्य द्रव्य **ण रुच्चेज्जा**-रुचिकर नहीं लगते।

## वचनागोचर

**अप्पस्स गूढतच्चं, णियमेणं अगोयरं वयणाणं।**
**जाणदि जदा ण सक्को, वदेदुं तदा अण्णजीवा।।103।।**

**अन्वयार्थ-णियमेणं**-नियम से **अप्पस्स**-आत्मा का **गूढतच्चं**-गूढ़तत्त्व **वयणाणं**-वचनों के **अगोयरं**-अगोचर है **जदा**-जब (प्राणी आत्मा को) **जाणदि**-जानता है **तदा**-तब (वह) **अण्णजीवा**-अन्य जीवों को **वदेदुं**-कहने में **ण सक्को**-समर्थ नहीं है।

## अकथ्य-स्वानुभव

**जे विजाणंति अप्पं, णो कहंति कया कत्थ वि ठाणम्मि।**
**जे वदंति ते जीवा, सुद्धप्पं खलु जाणंति णो।।104।।**

**अन्वयार्थ-जे**-जो **जीवा**-जीव **अप्पं**-आत्मा को **विजाणंति**-जानते हैं **कया**-वे कभी **कत्थ वि**-किसी भी **ठाणम्मि**-स्थान पर (उसके विषय में) **णो कहंति**-नहीं कहते **जे**-जो जीव **वदंति**-(आत्मा के विषय में) कहते हैं **ते**-वे **खलु**-निश्चय से **सुद्धप्पं**-शुद्धात्मा को **णो**-नहीं **जाणंति**-जानते।

## अकथ्य-आत्मतत्त्व

**णियमेणं सुद्धप्पा, अणुभूइ-गोयरो वयणातीदो।**
**सगसंवेज्ज-जोग्गो हु, अण्णेण ण जाणिदुं सक्को।।105।।**

**अन्वयार्थ-सुद्धप्पा**-शुद्धात्मा **णियमेणं**-नियम से **वयणातीदो**-वचनातीत

**अणुभूइ-गोयरो**-अनुभूति के गोचर है **सगसंवेज्ज-जोग्गो**-स्वसंवेद्य स्वानुभव योग्य है (शुद्धात्मा) **अण्णेण**-अन्य प्रकार से **जाणिदुं**-जानने में **सक्को**-शक्य **ण**-नहीं है।

## शुद्ध निश्चय

**अभव्वाणमुवएसो, वत्थो णियसेयत्थ-मसक्का ते।**
**उवएसो णाणीणं, तहेव वि सयं-णाणपुंजा।।106।।**

**अन्वयार्थ-अभव्वाणं**-अभव्यों के लिए **उवएसो**-उपदेश **वत्थो**-व्यर्थ है क्योंकि **ते**-वे **णियसेयत्थं**-अपने कल्याण के लिए **असक्का**-असमर्थ हैं **तहेव**-उस ही प्रकार **णाणीणं**-ज्ञानियों के लिए **वि**-भी **उवएसो**-उपदेश (व्यर्थ है क्योंकि वे) **सयं-णाणपुंजा**-स्वयं ज्ञानपुंज हैं।

**अण्णाणी णो सक्कदि, सयं जाणिदुं सत्थुवएसेहिं।**
**णाणीण णावस्सगो, पडिबोहणं णाणमया ते।।107।।**

**अन्वयार्थ-अण्णाणी**-अज्ञानी **सत्थुवएसेहिं**-शास्त्र व उपदेशों के द्वारा **सयं**-स्वयं को **जाणिदुं**-जानने में **णो सक्कदि**-समर्थ नहीं होता और **णाणीण**-ज्ञानियों को **पडिबोहणं**-ज्ञान देने की **आवस्सगो**-आवश्यकता **ण**-नहीं है (क्योंकि) **ते**-वे **णाणमया**-(स्वयं) ज्ञानमय हैं।

## शब्दातीत शुद्धात्मा

**इच्छमि जं णाणं हं, ण मे सहावो कया वि णाणं तं।**
**जो सहावो हु मज्झं, अगहणीयो अण्ण-जणेहिं।।108।।**

**अन्वयार्थ-हं**-मैं **जं**-जिस **णाणं**-ज्ञान की **इच्छमि**-इच्छा करता हूँ **तं**-वह **णाणं**-ज्ञान **कया वि**-कभी भी **मे**-मेरा **सहावो**-स्वभाव **ण**-नहीं है **हु**-निश्चय से **जो**-जो **मज्झं**-मेरा **सहावो**-स्वभाव है वह **अण्ण-जणेहिं**-अन्य जनों के द्वारा **अगहणीयो**-ग्रहण करने योग्य नहीं है।

## स्वात्म दृष्टि

**तूसदि अण्णदव्वेहि, मूढो णप्पे तच्चणाणजोदी।**
**सक्को सविहवमियरो, जाणिदुं पस्सिदुमणुभविदुं।।109।।**

**अन्वयार्थ-मूढो**-मूर्ख **अण्णदव्वेहि**-अन्य द्रव्यों के द्वारा **तूसदि**-तुष्ट होता है क्योंकि **अप्पे**-उसकी आत्मा में **तच्चणाणजोदी**-तत्त्वज्ञान रूप ज्योति **ण**-नहीं है **इयरो**-इतर (ज्ञानी) **सविहवं**-स्व (आत्म) वैभव को **जाणिदुं**-जानने में **पस्सिदुं**-देखने **अणुभविदुं**-व अनुभव करने में **सक्को**-समर्थ है।

## विजातीय देह

**जाणंति ण तण-पयडिं, मण्णंति सुह-हेदू तमेव बही।**
**देहस्सुवयारेणं, किण्णा होज्जा हु अप्पहिदं।।110।।**

**अन्वयार्थ-बही**-बहिरात्मा **हु**-निश्चय से **तण-पयडिं**-शरीर की प्रकृति को **ण**-नहीं **जाणंति**-जानते और **तमेव**-उसको ही **सुह-हेदू**-सुख का कारण **मण्णंति**-मानते हैं **देहस्स**-देह के **उवयारेणं**-उपकार से **अप्पहिदं**-आत्मा का हित **किण्णा**-कैसे **होज्जा**-हो सकता है।

## कर्मास्रव

**विणा भेदविण्णाणं, जे गहंति तिजोगेहिं भवत्था।**
**कम्मादु ण छुट्टंता, सीदंति खलु अण्णाणी ते।।111।।**

**अन्वयार्थ-जे**-जो **अण्णाणी**-अज्ञानी जीव **भेदविण्णाणं**-भेदविज्ञान के **विणा**-बिना **तिजोगेहिं**-तीनों योगों से **भवत्था**-संसार के पदार्थों को **गहंति**-ग्रहण करते हैं **ते**-वे **खलु**-निश्चय से **कम्मादु**-कर्मों से **ण छुट्टंता**-न छूटते हुए **सीदंति**-दु:ख प्राप्त करते हैं।

## संसार वृद्धि

**मणंते अप्परूवो, अत्था तावदु वड्ढदि संसारं।**
**जदप्पजोदिं लहंति, भेदविण्णाणेण सिज्झंति।।112।।**

**अन्वयार्थ**-(जब तक जीव) **अत्था**-(संसार के) पदार्थों को **अप्परूवो**-आत्म रूप **मणंते**-मानते हैं **तावदु**-तब तक **संसारं**-संसार की **वड्ढदि**-वृद्धि होती है **जदा**-जब **अप्पजोदिं**-आत्म ज्योति को **लहंति**-प्राप्त करते हैं तब **भेदविण्णाणेण**-भेद-विज्ञान के द्वारा **सिज्झंति**-मोक्ष प्राप्त करते हैं।

## थूल-सूक्ष्म देह

**थूल-सुहुम-वत्थे वा, देहो ण होदि थूल-सुहुमो जहा।**
**थूल-सुहुम-देहे णो, अप्पा थूल-सुहुमो तहेव।।113।।**

**अन्वयार्थ-जहा**-जिस प्रकार **थूल-सुहुम-वत्थे वा**-स्थूल या सूक्ष्म वस्त्र होने पर **देहो**-देह **थूल-सुहुमो**-स्थूल या सूक्ष्म **ण होदि**-नहीं होती **तहेव**-उसी प्रकार **थूल-सुहुम-देहे**-स्थूल या सूक्ष्म देह होने पर **अप्पा**-आत्मा **थूल-सुहुमो**-स्थूल या सूक्ष्म **णो**-नहीं होता।

## जीर्ण-नव देह

**जिण्ण-णवे वत्थे वा, देहो णो होदि णव-जिण्णो जहा।**
**जिण्ण-णवे देहे णो, अप्पा जिण्णो णवो तहेव।।114।।**

**अन्वयार्थ-जहा**-जिस प्रकार **जिण्ण-णवे वा**-पुराने या नए **वत्थे**-वस्त्र होने पर **देहो**-देह **णव-जिण्णो**-नई या पुरानी **णो**-नहीं **होदि**-होती **तहेव**-उसी प्रकार **जिण्ण-णवे**-पुरानी या नई **देहे**-देह होने पर **अप्पा**-आत्मा **जिण्णो**-पुराना **णवो**-या नया **णो**-नहीं होता।

## नष्ट-उत्पन्न देह

**वत्थ-णट्ठुप्पण्णम्मि, देहो णो होदि णट्ठ-उप्पण्णो।**
**देह-णट्ठुप्पण्णे ण, अप्पा णट्ठुप्पण्णो तहा।।115।।**

**अन्वयार्थ**-(जिस प्रकार) **वत्थ-णट्ठुप्पण्णम्मि**-वस्त्र के नष्ट या उत्पन्न होने पर **देहो**-देह **णट्ठ-उप्पण्णो**-नष्ट या उत्पन्न **णो**-नहीं **होदि**-होती **तहा**-उसी प्रकार **देह-णट्ठुप्पण्णे**-देह के नष्ट या उत्पन्न होने पर **अप्पा**-आत्मा **णट्ठुप्पण्णो**-नष्ट या उत्पन्न **ण**-नहीं होता।

## कृष्ण-श्वेतदेह

**किण्ह-सेद-वत्थे वा, देहो ण होदि किण्ह-सेदो जहा।**
**किण्ह-सेद-देहे णो, अप्पा किण्ह-सेदो तहेव।।116।।**

**अन्वयार्थ**-**जहा**-जिस प्रकार **किण्ह-सेद-वत्थे वा**-काले या सफेद वस्त्र होने पर **देहो**-शरीर **किण्ह-सेदो**-काला या सफेद **ण होदि**-नहीं होता **तहेव**-उसी प्रकार **किण्ह-सेद-देहे**-काला या सफेद शरीर होने पर **अप्पा**-आत्मा **किण्ह-सेदो**-काला या सफेद **णो**-नहीं होता।

## रक्त-पीत देह

**रत्त-पीद-वत्थे वा, देहो ण होदि रत्तपीदो जहा।**
**रत्त-पीद-देहे णो, अप्पा रत्त-पीदो तहेव।।117।।**

**अन्वयार्थ**-**जहा**-जिस प्रकार **रत्तपीद-वत्थे वा**-लाल या पीला वस्त्र होने पर **देहो**-देह **रत्तपीदो**-लाल या पीली **ण**-नहीं **होदि**-होती **तहेव**-उसी प्रकार **रत्तपीद-देहे**-लाल या पीली देह होने पर **अप्पा**-आत्मा **रत्त-पीदो**-लाल या पीला **णो**-नहीं होता।

## गुरु-लघुदेह

**लहु-दिग्घे वत्थे वा, देहो ण होदि लहू दिग्घो जहा।**
**लहु-दिग्घे देहे णो, अप्पा लहू दिग्घो तहेव।।118।।**

**अन्वयार्थ**-**जहा**-जिस प्रकार **लहु-दिग्घे वत्थे वा**-छोटा या बड़ा वस्त्र होने पर **देहो**-देह **लहू**-छोटी **दिग्घो**-या बड़ी **ण**-नहीं **होदि**-होती **तहेव**-उसी प्रकार **लहु-दिग्घे**-छोटी या बड़ी **देहे**-देह होने पर **अप्पा**-आत्मा **लहू**-छोटा **दिग्घो**-या बड़ा **णो**-नहीं होता।

**लहु-दिग्घे भवणे वा, देहो लहू दिग्घो ण होदि कया।**
**लहु-दिग्घे देहे णो, अप्पा लहू दिग्घो तहेव।।119।।**

**अन्वयार्थ**-(जिस प्रकार) **लहु-दिग्घे वा**-छोटा या बड़ा **भवणे**-भवन होने पर **देहो**-देह **कया**-कभी **लहू**-छोटी (या) **दिग्घो**-बड़ी **ण**-नहीं **होदि**-होती **तहेव**-उसी प्रकार **लहु-दिग्घे**-छोटी या बड़ी **देहे**-देह होने पर **अप्पा**-आत्मा **लहू**-छोटा या **दिग्घो**-बड़ा **णो**-नहीं होता।

## आर्द्र शुष्क देह

**अद्द-सुक्क-भवणे वा, देहो अद्द-सुक्को ण होदि कया।**
**अद्दसुक्क-देहे णो, अप्पा अद्द-सुक्को तहेव।।120।।**

**अन्वयार्थ**-जिस प्रकार **अद्द-सुक्क-भवणे वा**-गीला या सूखा भवन होने पर **देहो**-देह **कया**-कभी **अद्द-सुक्को**-गीली या सूखी **ण**-नहीं **होदि**-होती **तहेव**-उसी प्रकार **अद्द-सुक्क-देहे**-गीली या सूखी देह होने पर **अप्पा**-आत्मा (कभी) **अद्द-सुक्को**-गीला या सूखा **णो**-नहीं होता।

## दह्यमान शरीर

**देहो तहा णो होज्ज, भवण-पज्जलिदे वा णिम्माणम्मि।**
**अप्पा वि णो तहेव हु, देह-पज्जलिदे णिम्माणे।।121।।**

**अन्वयार्थ**-**हु**-निश्चय ही **भवण-पज्जलिदे**-भवन के जलने पर **वा**-या **णिम्माणम्मि**-निर्माण होने पर **देहो**-देह **तहा**-उस प्रकार (अर्थात् जलती या निर्मित) **णो**-नहीं **होज्ज**-होती **देह-पज्जलिदे**-देह के जलने पर या **णिम्माणे**-निर्माण होने पर **अप्पा**-आत्मा **वि**-भी **तहेव**-उस प्रकार (जलती या निर्मित) **णो**-नहीं होती।

## देह-हानि वृद्धि

**असंखपदेसि-अप्पे, णो होदि पदेस-हाणी विड्ढी हु।**
**पदेसा पोग्गलाणं, हाणि-विड्ढि-रूवा जाणेज्ज।।122।।**

**अन्वयार्थ-असंखपदेसि-अप्पे**-असंख्यात् प्रदेशी आत्मा में **हु**-निश्चय से **पदेस-हाणी**-प्रदेश की हानि **विड्ढी**-वृद्धि **णो**-नहीं **होदि**-होती **पोग्गलाणं**-पुद्गलों के **पदेसा**-प्रदेश **हाणि-विड्ढि-रूवा**-हानि-वृद्धि रूप **जाणेज्ज**-जानने चाहिए।

## बद्धात्मा

**उज्झिऊणं कंचुअं, देहावरणं मरेदि णो सप्पो।**
**उज्झिच्चु तणं तहेव, जीवो णो मरदि णिच्छयेण।।123।।**

**अन्वयार्थ**-(जिस प्रकार) **देहावरणं**-देह के आवरण रूप **कंचुअं**-काँचली को **उज्झिऊणं**-त्यागकर **सप्पो**-सर्प **मरेदि णो**-मृत्यु को प्राप्त नहीं होता **तहेव**-उसी प्रकार **तणं**-शरीर को **उज्झिच्चु**-त्यागकर **जीवो**-जीव **णिच्छयेण**-निश्चय से **णो मरदि**-मृत्यु को प्राप्त नहीं करता।

## निर्विष

**णिम्मोअस्स चागादु, णिव्विसो होदि जहा भुयंगो णो।**
**को णरो होदि जोगी, विणा विसय-वियार-चागेण।।124।।**

**अन्वयार्थ**-**जहा**-जिस प्रकार **णिम्मोअस्स**-काँचली के **चागादु**-त्याग से **भुयंगो**-साँप **णिव्विसो**-निर्विष **णो**-नहीं **होदि**-होता (उसी प्रकार) **विसय-वियार-चागेण**-विषय-विकार त्याग के **विणा**-बिना **को**-कौन **णरो**-मनुष्य **जोगी**-योगी **होदि**-होता है।

## आवरण

**णारिएले तच्छम्मि, ण होदि रससादसत्तिहीणं तं।**
**तहा देहे मुंचणे, चेयणा हु सत्तिहीणा णो।।125।।**

**अन्वयार्थ**-(जिस प्रकार) **णारिएले**-नारियल को **तच्छम्मि**-छीलने पर **तं**-वह **रससादसत्तिहीणं**-रस, स्वाद, शक्ति से हीन **ण**-नहीं **होदि**-होता **तहा**-उसी प्रकार **हु**-निश्चय से **देहे**-शरीर को **मुंचणे**-त्यागने पर **चेयणा**-चेतना **सत्तिहीणा**-शक्तिहीन **णो**-नहीं होती।

## भावकर्म

**तक्कं चागेण विणा, सप्पिमवत्थं लहेदि कं खीरं।**
**को लहेदि सुद्धप्पं, भावकम्मं चागेण विणा।।126।।**

**अन्वयार्थ**-**तक्कं**-मट्ठे को **चागेण विणा**-त्यागे बिना **कं**-कौन सा **खीरं**-दुग्ध **सप्पिमवत्थं**-घी अवस्था को **लहेदि**-प्राप्त करता है (उसी प्रकार) **भावकम्मं**-भावकर्म को **चागेण विणा**-त्यागे बिना **को**-कौन **सुद्धप्पं**-शुद्धात्मा को **लहेदि**-प्राप्त करता है (अर्थात् कोई नहीं)।

## द्रव्यकर्म

**खलं चागं विणा को, तिल्लरूवो खलु तिलहणो होज्जा।**
**को लहेदि सुद्धप्पं, दव्वकम्मं विणा चागेण।।127।।**

**अन्वयार्थ-खलु**-निश्चय से **खलं**-खल को **चागं विणा**-त्यागे बिना **को**-कौन **तिलहणो**-तिलहन **तिल्लरूवो**-तेल रूप **होज्जा**-होता है उसी प्रकार **दव्वकम्मं**-द्रव्य कर्म **चागेण विणा**-त्याग के बिना **को**-कौन **सुद्धप्पं**-शुद्धात्मा को **लहेदि**-प्राप्त करता है अर्थात् कोई नहीं।

## नोकर्म

**चागेण विणावरणं, को कप्पेदि लहिदुं तस्स तिल्लं।**
**णोकम्मं चागेणं, णियसुद्धभावं णाणी को।।128।।**

**अन्वयार्थ**-(आवरण युक्त बादाम आदि के) **आवरणं**-आवरण **चागेण विणा**-त्यागे बिना **तस्स**-उसके **तिल्लं**-तेल को **लहिदुं**-प्राप्त करने में **को**-कौन **कप्पेदि**-समर्थ होता है (उसी प्रकार) **णो-कम्मं**-नोकर्म **चागेणं**-त्यागे (बिना) **को**-कौन **णाणी**-ज्ञानी **णियसुद्धभावं**-निज शुद्ध भाव को (प्राप्त करने में समर्थ होता है अर्थात् कोई नहीं)।

## भव-वर्द्धक हेतु

**जो अयलो सगरूवे, तस्स मुत्ती जिणसासणे भणिदा।**
**रदो परसरूवे जो, तस्स संसारो हु वड्ढेदि।।129।।**

**अन्वयार्थ-जो**-जो (भव्य जीव) **सगरूवे**-अपने स्वरूप में **अयलो**-अचल रहता है **तस्स**-उसकी **मुत्ती**-मुक्ति **जिणसासणे**-जिनशासन में **भणिदा**-कही गई है (तथा) **जो**-जो **परसरूवे**-पर स्वरूप में **रदो**-रत रहता है **तस्स**-उसका **संसारो**-संसार **हु**-निश्चय से **वड्ढेदि**-वृद्धिंगत होता है।

## जन संसर्ग

**संलीणो ववहारे, णियमेणं खुब्भेदि माणुसो सो।**
**चंचुरमणस्स मुत्ती, ण तं उज्झदु जण-संसग्गं।।130।।**

**अन्वयार्थ**-जो मनुष्य **ववहारे**-व्यवहार में **संलीणो**-संलीन है **सो**-वह **माणुसो**-मनुष्य **णियमेणं**-नियम से **खुब्भेदि**-क्षुब्ध होता है **चंचुर-मणस्स**-चंचल मन की **मुत्ती**-मुक्ति **ण**-नहीं होती **तं**-इसीलिए (मुक्ति हेतु) **जण-संसग्गं**-लोगों का संसर्ग **उज्झदु**-त्याग देना चाहिए (क्योंकि लोगों के संसर्ग से चित्त चलायमान होता है)।

## स्वात्मवास

**जो खलु अणप्पदिट्ठी, कुणदि भेयं भवणे अरण्णे वा।**
**अप्पसरूवे लीणो, णो भेयं वसदि सगप्पम्मि।।131।।**

**अन्वयार्थ**-**जो**-जो **अणप्पदिट्ठी**-अनात्मदृष्टि है (वह) **खलु**-निश्चय से **भवणे**-भवन में **वा**-अथवा **अरण्णे**-वन में **भेयं**-भेद **कुणदि**-करता है (जो) **अप्प-सरूवे**-आत्म स्वरूप में **लीणो**-लीन है (वह भवन, वन अन्य स्थानों के मध्य) **भेयं**-भेद **णो**-नहीं करता अपितु सदा **सगप्पम्मि**-अपनी आत्मा में **वसदि**-वास करता है।

## स्वभावलीन

**सव्व-विअप्पा उज्झिय, लीणो एयत्त-सहावि-अप्पम्मि।**
**से उवसग्गमणिट्ठं, कुणदि किंचि ण लहदि सहावं।।132।।**

**अन्वयार्थ**-(जो भव्य जीव) **सव्व-विअप्पा**-सभी प्रकार के विकल्पों को **उज्झिय**-त्यागकर **एयत्त-सहावि-अप्पम्मि**-एकत्व स्वभावी आत्मा में **लीणो**-लीन है **उवसग्गमणिट्ठं**-उपसर्ग व अनिष्ट भी **से**-उसका **किंचि**-कुछ **ण**-नहीं **कुणदि**-करते तथा **सहावं**-(वह आत्म लीन योगी निज) स्वभाव को **लहदि**-प्राप्त करता है।

## मोक्ष मूल

**मुणमि णिव्वाण-मूलं, हं अप्पे अप्प-भावणं णिच्चं।**
**तस्स भवो वड्ढेदि हु, मुणेदि जो सरीरं अप्पा।।133।।**

**अन्वयार्थ**-**हं**-मैं **णिच्चं**-नित्य **अप्पे**-आत्मा में **अप्प-भावणं**-आत्मा की

भावना को **णिव्वाण-मूलं**-निर्वाण का मूल **मुणमि**- मानता हूँ (तथा) **जो**-जो **सरीरं**-शरीर को **अप्पा**-आत्मा **मुणेदि**-मानता है **तस्स**-उसका **भवो**-संसार **हु**-निश्चय से **वड्ढेदि**-वृद्धिंगत होता है।

## गुरु-शिष्य

**संसारभमण-हेदू, अप्पा हि मुक्खो णिव्वाण-हेदू।**
**तं अप्पा अप्पस्स वि, गुरू सिस्सो एग-समयम्मि।।134।।**

**अन्वयार्थ-अप्पा**-आत्मा **हि**-ही **संसारभमण-हेदू**-संसार परिभ्रमण का हेतु है (व आत्मा ही) **मुक्खो णिव्वाण-हेदू**-निर्वाण प्राप्त करने का प्रमुख कारण है **तं**-इसीलिए **एग-समयम्मि**-एक ही समय में **अप्पा**-आत्मा **अप्पस्स**-आत्मा का **गुरू-सिस्सो-वि**-गुरु भी है और शिष्य भी।

## निमित्त-नैमित्तिक संबंध

**सुहासुहाण घडाणं, मिदिगा णिम्माणस्स मुक्ख-हेदू।**
**कुंभयारो णिमित्तं, मिदिगं विणा घडो असक्को।।135।।**

**अन्वयार्थ-सुहासुहाण घडाणं**-शुभ अशुभ घटों के **णिम्माणस्स**-निर्माण का **मुक्ख-हेदू**-मुख्य हेतु **मिदिगा**-मिट्टी है **कुंभयारो**-कुंभकार **णिमित्तं**-तो निमित्त है **मिदिगं विणा**-मिट्टी के बिना **घडो असक्को**-घट (का निर्माण) अशक्य है।

**णाणा-भूसणाणं च, कणगं णिम्माणस्स मुक्ख-हेदू।**
**सुवण्णारो णिमित्तं, कणगेणं विणा असक्काणि।।136।।**

**अन्वयार्थ-णाणा-भूसणाणं**-नाना प्रकार के आभूषणों के **णिम्माणस्स**-निर्माण का **मुक्ख-हेदू**-मुख्य हेतु **कणगं**-स्वर्ण है **सुवण्णारो**-सुनार तो **णिमित्तं**-निमित्त है **च**-और **कणगेणं**-कनक के **विणा**-बिना **असक्काणि**-(वे स्वर्णाभूषण) अशक्य हैं।

**बहुवण्ण-जुद-वत्थाण, सुत्तं णिम्माणस्स मुक्ख-हेदू।**
**कोलिओ णिमित्तं ता, सुत्तं विणासक्काणि ताणि।।137।।**

**अन्वयार्थ-बहुवण्ण-जुद-वत्थाण**-बहुत प्रकार के रंगों से युक्त वस्त्रों के **णिम्माणस्स**-निर्माण का **मुक्ख-हेदू**-मुख्य हेतु **सुत्तं**-धागा है **कोलिओ**-जुलाहा **ता**-तो **णिमित्तं**-निमित्त मात्र है **सुत्तं विणा**-धागे के बिना **ताणि**-वे (वस्त्र) **असक्काणि**-अशक्य हैं।

**तहा अप्पा अप्पणो, सस्सद-णिव्वाण-कारणं होज्जा।**
**जिणवरो जिणसुत्तं वि, णिग्गंथो णिमित्तं मेत्तं।।138।।**

**अन्वयार्थ-तहा**-उसी प्रकार **अप्पा**-आत्मा **अप्पणो**-आत्मा के **सस्सद-णिव्वाण-कारणं**-शाश्वत निर्वाण का कारण **होज्जा**-होता है **जिणवरो**-जिनेन्द्र प्रभु **जिणसुत्तं**-जिनसूत्र (और) **णिग्गंथो**-निर्ग्रन्थ मुनि **वि**-भी **णिमित्तं**-निमित्त **मेत्तं**-मात्र हैं।

## तत्त्वज्ञानी निर्भीक

**सस्सदरूवं अप्पं, मूढो ण जाणदि तच्चणाणेणं।**
**सो विहेदि मरणादो, णाणी जम्म-मरणादो णो।।139।।**

**अन्वयार्थ-मूढो**-जो मूर्ख **तच्चणाणेणं**-तत्त्व ज्ञान के द्वारा **सस्सदरूवं**-शाश्वत रूप **अप्पं**-आत्मा को **ण**-नहीं **जाणदि**-जानता **सो**-वह **मरणादो**-मृत्यु से **विहेदि**-डरता है किंतु **णाणी**-तत्त्व ज्ञानी **जम्म-मरणादो**-जन्म-मरण से **णो**-भयभीत नहीं होता।

## मृत्यु रहित आत्मा

**देहो ण मरदि कया वि, कुडि-वत्थ-भूसणादि-चागत्तो य।**
**तहा णो मरदि अप्पा, देह-चागादो णादव्वो।।140।।**

**अन्वयार्थ**-(जिस प्रकार) **कुडि-वत्थ-भूसणाइ-चागत्तो य**-कुटी, वस्त्र और आभूषण आदि के त्याग से **देहो**-देह **कया**-कभी **वि**-भी **ण**-नहीं **मरदि**-मरती **तहा**-उसी प्रकार **देह-चागादो**-त्याग से **अप्पा**-आत्मा **हु**-निश्चय ही **मरदि**-मृत्यु को प्राप्त नहीं होती **णादव्वो**-ऐसा जानना चाहिए।

## निश्चय-व्यवहार

**ववहारे अइणिउणो, मंदबुद्धी अप्पसरूवम्मि सो।**
**अप्प-सरूवे कुसलो, सफलो णो होदि ववहारे।।141।।**

**अन्वयार्थ**-जो **ववहारे**-व्यवहार में **अइणिउणो**-अतिनिपुण होता है **सो**-वह **अप्पसरूवम्मि**-आत्म स्वरूप में **मंदबुद्धी**-मंदबुद्धि होता है तथा जो **अप्प-सरूवे**-आत्म स्वरूप में **कुसलो**-कुशल होता है वह **ववहारे**-व्यवहार में कभी **सफलो**-सफल **णो**-नहीं **होदि**-होता।

## स्वभाव अवाप्ति

**अप्प-चिम्मयो रूवो, णाण-दंसण-संजुदो पोग्गलस्स।**
**पूरणगलणं पस्सिय, णाणी सया रमदे अप्पे।।142।।**

**अन्वयार्थ**-**अप्प-चिम्मयो रूवो**-आत्मा का चिन्मय रूप **णाणदंसण-संजुदो**-ज्ञान व दर्शन से संयुक्त है (और) **पोग्गलस्स**-पुद्गल का (स्वभाव) **पूरणगलणं**-पूरण व गलन है **पस्सिय**-(यह) देखकर **णाणी**-ज्ञानी **सया**-सदा **अप्पे**-आत्मा में **रमदे**-रमण करता है।

## स्वज्ञ अच्युत

**भव्वुल्लो अब्भसेदि, सया चेयण-पोग्गलाणं भेयं।**
**होदि अच्चुदो अप्पे, णाणी हु तच्च-चिंतमाणो।।143।।**

**अन्वयार्थ**-**भव्वुल्लो**-जो भव्य जीव **चेयण-पोग्गलाणं**-चेतना व पुद्गल के **भेयं**-भेद का **सया**-सदा **अब्भसेदि**-अभ्यास करता है वह **णाणी**-ज्ञानी **हु**-निश्चय से **तच्च-चिंतमाणो**-तत्त्व चिंतन करता हुआ **अप्पे**-आत्मा में **अच्चुदो**-अच्युत **होदि**-होता है।

## तत्त्वानुभव

**पुव्वम्मि तच्चणाणी, अणुभवदि उम्मत्तोव्व सव्व-जगं।**
**चलचित्तं व हु सुण्णं, तच्चचिंतणब्भासेणं च।।144।।**

**अन्वयार्थ**-**तच्चणाणी**-तत्त्वज्ञानी **पुव्वम्मि**-पूर्व में तो **सव्व-जगं**-संपूर्ण

जगत् को **उम्मत्तोव्व**-उन्मत्त के समान **अणुभवदि**-अनुभव करता है **च**-और (पश्चात्) **तच्चचिंतणब्भासेणं**-तत्त्व चिंतन के अभ्यास से (संपूर्ण जगत्) **चलचित्तं व**-चलचित्र के समान **सुण्णं**-शून्य (अनुभव करता है)।

## शुद्धात्म लीनता

**बहुवारं पढिय लिहिय, धम्मदेसणं सुणिच्चु चवित्ता वि।**
**भव्वो णो लहदि सिवं, जावदु पलीदि ण सुद्धप्पे।।145।।**

**अन्वयार्थ-बहुवारं**-बहुत बार **धम्मदेसणं**-धर्मदेशना **सुणिच्चु**-सुनकर **चवित्ता**-बोलकर **पढिय**-पढ़कर **लिहिय**-लिखकर **वि**-भी **भव्वो**-भव्य (तब तक) **सिवं**-मोक्ष **णो लहदि**-प्राप्त नहीं करता **जावदु**-जब तक (वह) **सुद्धप्पे**-(निज) शुद्धात्मा में **ण पलीदि**-लीन नहीं होता।

## महत्त्वपूर्ण आत्मबुद्धि

**सिवणम्मि वि णो होज्जा, देहादीसुं कया अप्पबुद्धी।**
**अप्पे अप्पधिं कुणदु, पुणो पुणो झाणजोगेणं।।146।।**

**अन्वयार्थ-सिवणम्मि**-स्वप्न में **वि**-भी **कया**-कभी **देहादीसुं**-देहादिकों में **अप्पबुद्धी**-आत्मबुद्धि **णो**-ना **होज्जा**-हो (इसीलिए) **पुणो पुणो**-पुनः पुनः **झाणजोगेणं**-ध्यान के योग से **अप्पे**-आत्मा में **अप्पधिं**-आत्म बुद्धि **कुणदु**-करनी चाहिए।

## मुक्ति क्रम

**सव्वपावाणि उज्झिय, करेज्जा णिच्चं हि पुण्णकज्जाणि।**
**णंतरं उज्झेज्ज ते, तदा सक्कदि मोक्खं लहिदुं।।147।।**

**अन्वयार्थ-सव्वपावाणि**-सभी पापों को **उज्झिय**-त्यागकर **णिच्चं हि**-नित्य ही **पुण्णकज्जाणि**-पुण्य कार्यों को **करेज्जा**-करना चाहिए **णंतरं**-अनंतर **ते**-उन्हें भी **उज्झेज्ज**-त्याग देना चाहिए (तभी वह) **मोक्खं**-मोक्ष **लहिदुं**-प्राप्त करने में **सक्कदि**-समर्थ होता है।

## त्याज्य

**ओग्गहेज्ज जदणेणं, सम्मत्तं सण्णाणं सहजदाइ।**
**मिच्छाणाणं रायं, उज्झेज्ज दोसं मिच्छत्तं।।148।।**

**अन्वयार्थ-सम्मत्तं**-सम्यक्त्व व **सण्णाणं**-सम्यग्ज्ञान **जदणेणं**-यत्न पूर्वक **सहजदाइ**-सहजता से **ओग्गहेज्ज**-ग्रहण करना चाहिए **मिच्छत्तं**-मिथ्यात्व **मिच्छाणाणं**-मिथ्याज्ञान **रायं**-राग व **दोसं**-द्वेष का **उज्झेज्ज**-त्याग करना चाहिए।

## निर्विकल्प दशा

**असंजमं उज्झित्ता, सयलसंजमं गहेज्ज बुद्धीए।**
**होज्जा हु णिव्विअप्पो, ता वि संजमस्स विअप्पो ण।।149।।**

**अन्वयार्थ-बुद्धीए**-बुद्धिपूर्वक **असंजमं**-असंयम को **उज्झित्ता**-त्यागकर **सयल-संजमं**-सकल संयम को **गहेज्ज**-ग्रहण करना चाहिए (जब) **णिव्विअप्पो**-निर्विकल्प **होज्ज**-हो जाते हैं **ता**-तो **हु**- निश्चय से **संजमस्स**-संयम का **विअप्पो**-विकल्प **वि**-भी **ण**-नहीं होता (अर्थात् संयम का विकल्प भी छूट जाता है)।

## उभय विहीन

**भवमूलं विअप्पो वि, संकप्प-बाहगो सुद्धुवजोगे।**
**उहयादो जो हीणो, सक्कदि सव्वदुह-णासेदुं।।150।।**

**अन्वयार्थ-विअप्पो**-विकल्प **भवमूलं**-संसार का मूल है व **संकप्प-बाहगो सुद्धुवजोगे**-संकल्प भी शुद्धोपयोग में बाधक है **जो**-जो **उहयादो**-संकल्प व विकल्प दोनों से **हीणो**-हीन है व **सव्वदुह- णासेदुं**-सर्व दुखों को नष्ट करने में **सक्कदि**-समर्थ होता है।

## उभय बाधा

**एदाणि मे विअप्पो, बहुविह-धारणा दिढ-पदिण्णा वा।**
**संकप्पो खलु उहयो, बाहगो णिव्विअप्प-झाणे।।151।।**

**अन्वयार्थ-एदाणि**-ये सभी **मे**-मेरे हैं **विअप्पो**-(यह) विकल्प है **बहुविह-धारणा**-बहुत प्रकार की धारणा **वा**-अथवा **दिढ-पदिण्णा**-दृढ़ प्रतिज्ञा **संकप्पो**-संकल्प है **खलु**-निश्चय से **उहयो**-संकल्प व विकल्प दोनों **णिव्वियप्प-झाणे**-निर्विकल्प ध्यान में **बाहगो**-बाधक हैं।

**अव्वदीहि गहिदव्वं, वदी पालेज्जा वदं णिद्दोसं।**
**सहजो पावंति वदी, सस्सदं विहवं हु अप्पस्स।।152।।**

**अन्वयार्थ-अव्वदीहि**-अव्रतियों के द्वारा (व्रत) **गहिदव्वं**-ग्रहण किये जाने चाहियें **वदी**-व्रतियों को **णिद्दोसं**-निर्दोष **वदं**-व्रत **पालेज्जा**-पालन करना चाहिए **वदी**-व्रती **अप्पस्स**-आत्मा के **सस्सदं**-शाश्वत **विहवं**-वैभव को **सहजो**-सहज **हु**-ही **पावंति**-प्राप्त करते हैं।

## पुष्पवत् पुण्य

**रुक्खादो जह झरंति, फलागदे मणोण्णाणि पुप्फाइं।**
**तहा वदाइ-पुप्फाणि, संपत्ते वि सिद्धत्त-फले।।153।।**

**अन्वयार्थ-जह**-जिस प्रकार **फलागदे**-फल आने पर **रुक्खादो**-वृक्ष से **मणोण्णाणि**-मनोज्ञ (सुंदर) **पुप्फाइं**-पुष्प स्वयं **झरंति**-झरते हैं **तहा**-उसी प्रकार **सिद्धत्त-फले**-सिद्धत्व रूपी फल **संपत्ते**-प्राप्त होने पर **वदाइ-पुप्फाणि**-व्रतादि पुष्प **वि**-भी स्वयं झर जाते हैं।

## सहजोपलब्धि

**पुरिसत्थेणं गहंति, सग-कल्लाणत्थं रयणत्तयं च।**
**णिव्वाणे संपत्ते, पुप्फं व्व तं मुअंति भव्वो।।154।।**

**अन्वयार्थ-भव्वो**-भव्य जीव **पुरिसत्थेणं**-पुरुषार्थ से **सगकल्लाणत्थं**-स्व कल्याण के लिए **पुप्फं व्व**-पुष्प के समान **रयणत्तयं**-रत्नत्रय **गहंति**-ग्रहण करते हैं **णिव्वाणे**-निर्वाण (रूपी फल) **संपत्ते**-प्राप्त होने पर **तं**-वह (रत्नत्रय रूपी पुष्प) **मुअंति**-छूट जाते हैं।

## मोही की प्रवृत्ति

**दहमाण-वणे भमंति, अंधयो पंगू य सग-रक्खाए।**
**तदा अंधस्स खंधे, गच्छदि आरूढिदूणं सो।।155।।**

**तं दस्सं पस्संते, मोही जीवा मणंति खलु एगो।**
**तच्चणाणी भिण्णो हि, अंधं पंगुं तहा उहयं।।156।।**

**अन्वयार्थ-अंधयो**-अंधा पुरुष **य**-और **पंगू**-लंगड़ा **दहमाण-वणे**-जलते हुए वन में **सगरक्खाए**-अपनी रक्षा के लिए **भमंति**-घूमते हैं **तदा**-तब **अंधस्स**-अंधे के **खंधे**-कंधे पर **आरूढिदूणं**-आरूढ़ होकर **सो**-वह **गच्छदि**-जाता है **तं**-उस **दस्सं**-दृश्य को **मोही जीवा**-जब मोही जीव **पस्संते**-देखते हैं तो उन्हें **खलु**-निश्चय से **एगो**-एक **मणंति**-मानते हैं (वे समझते हैं कि अंधा स्वयं मार्ग देखकर चल रहा है जबकि) **तच्चणाणी**-तत्त्वज्ञानी **अंधं**-अंधे **पंगुं**-लंगड़े **उहयं**-दोनों को **भिण्णो**-भिन्न **हि**-ही (मानता है)।

**देहारूढं अप्पं, मोही जीवो मणदि सया एगो।**
**अचेयणचेयणाणं, भेदेणं खलु पुढो णाणी।।157।।**

**अन्वयार्थ**-(इसी प्रकार) **मोही जीवो**-मोही जीव **देहारूढं अप्पं**-देह में आरूढ़ आत्मा को (अर्थात् देह व आत्मा को) **सया**-सदा **एगो**-एक **मणदि**-मानता है(वह समझता है कि यह शरीर ही देखता है जबकि ) **णाणी**-तत्त्वज्ञानी **अचेयण-चेयणाणं**-अचेतन व चेतन के **भेदेणं**-भेद से (शरीर व आत्मा को) **खलु**-निश्चय से **पुढो**-पृथक (मानता है) (वह शरीर को ज्ञाता दृष्टा नहीं मानता)।

**आरोहगं च अस्सं, मोही मणदि एगो हु पेक्खित्ता।**
**तच्चणाणी मण्णेदि, अस्सं आरोहगं भिण्णो।।158।।**

**अन्वयार्थ-मोही**-मोही जीव **अस्सं**-अश्व **च**-और **आरोहगं**-उस पर आरूढ़ सवार को **पेक्खित्ता**-देखकर (उन्हें) **एगो**-एक **हु**-ही **मणदि**-मानता है (जबकि) **तच्चणाणी**-तत्त्वज्ञानी **अस्सं**-अश्व व **आरोहगं**-सवार को **भिण्णो**-भिन्न-भिन्न **मण्णेदि**-मानता है।

## समर्थ कौन

**जो सुत्तो उम्मत्तो, ण सक्कदि जाणिदुं अप्पसरूवं।**
**तच्चणाणेण जुत्तो, समत्थो अप्पं पस्सेदुं।।159।।**

**अन्वयार्थ-जो**-जो जीव **सुत्तो**-सुप्त व **उम्मत्तो**-उन्मत्त है वह **अप्पसरूवं**-आत्म स्वरूप को **जाणिदुं**-जानने में **ण सक्कदि**-समर्थ नहीं होता है **तच्चणाणेण**-तत्त्वज्ञान से **जुत्तो**-युक्त (जीव) **अप्पं**-आत्मा को **पस्सेदुं**-देखने में **समत्थो**-समर्थ होता है।

## भेद-विज्ञान

**भेदविण्णाण-जुत्तो, णिज्जरदि सुत्तुम्मत्तवत्थाए।**
**सत्थाइं हु पढिच्चा, जागन्तो णो वि अण्णाणी।।160।।**

**अन्वयार्थ-हु**-निश्चय ही **भेदविण्णाण-जुत्तो**-भेद विज्ञान से युक्त जीव **सुत्तुम्मत्तवत्थाए**-सुप्त व उन्मत्त अवस्था में भी **णिज्जरदि**-कर्मों का क्षय करता है जबकि **अण्णाणी**-अज्ञानी जीव (शरीर व आत्मा के भेद विज्ञान से रहित जीव) **सत्थाइं**-शास्त्रों को **पढिच्चा**-पढ़कर **जागन्तो वि**-जागता हुआ भी **णो**-कर्मों का क्षय नहीं करता।

## श्रद्धा-लीनता

**सद्धा जम्मि पयत्थे, पलीदि जीवो तस्सिं पयत्थम्मि।**
**अहण्णिसं हु पयत्थो, विज्जदि सो तस्स बुद्धीए।।161।।**

**अन्वयार्थ-जम्मि**-जिस **पयत्थे**-पदार्थ में **सद्धा**-श्रद्धा है **जीवो**-जीव **तस्सिं**-उसी **पयत्थम्मि**-पदार्थ में **पलीदि**-लीन होता है तथा **सो**-वह **पयत्थो**-पदार्थ **हु**-ही **तस्स**-उसकी **बुद्धीए**-बुद्धि में **अहण्णिसं**-अहर्निश **विज्जदि**-विद्यमान रहता है।

## अभेद रत्नत्रय

**होज्जा कुसला बुद्धी, सद्धा सम्मरूवेण पवट्टेदि।**
**जम्मि वट्टदे सद्धा, होदि लीणो तस्सिमप्पे हु।।162।।**

**अन्वयार्थ**-(जब मनुष्य की) **कुसला बुद्धी**-बुद्धि कुशल **होज्जा**-होती है (तब) **सद्धा**-श्रद्धा **सम्मरूवेण**-सम्यक् रूप से **पवट्टेदि**-प्रवर्तन करती है और **जम्मि**-जिसमें **सद्धा**-श्रद्धा **वट्टदे**-वर्तन करती है **तस्सिं हु**-उस ही **अप्पे**-आत्मा में (वह मनुष्य) **लीणो**-(शाश्वत) लीन **होदि**-हो जाता है।

**अप्पहिदंकर-अत्थे, सहजभावेहि ठादि जस्स बुद्धी।**
**तस्स सद्धा वि तेसुं, मणं पलीदि ण कया अण्णे।।163।।**

**अन्वयार्थ**-**जस्स**-जिसकी **बुद्धी**-बुद्धि **अप्पहिदंकर-अत्थे**-आत्म हितंकर अर्थ में **सहजभावेहि**-सहज भावों से **ठादि**-ठहरती है **तस्स**-उसकी **सद्धा**-श्रद्धा **वि**-भी **तेसुं**-उसमें (ठहरती है, उसका) **मणं**-मन भी (उसमें) **पलीदि**-लीन हो जाता है **ण कया अण्णे**-अन्य में कभी भी (लीन नहीं होता)।

## शुद्धात्मा ही परमात्मा

**परमप्पं थुणदे जो, अप्पा परमप्पा दिस्सदि भिण्णो।**
**णिच्छयेण णहि भेयो, सो अप्पा होदि परमप्पा।।164।।**

**अन्वयार्थ**-**जो**-जो (आत्मा) **परमप्पं**-परमात्मा की **थुणदे**-स्तुति करता है वह **अप्पा**-आत्मा व **परमप्पा**-परमात्मा **भिण्णो**-भिन्न **दिस्सदि**-दिखाई देता हैं **णिच्छयेण**-निश्चय से (उनमें कोई) **भेयो**-भेद **णहि**-नहीं है **सो**-वह **अप्पा**-आत्मा ही **परमप्पा**-परमात्मा **होदि**-होता है।

## निमित्त प्रभाव

**फासदि इंधणमग्गिं, अग्गी रूवं णियमेण होदि तं।**
**तहेव खलु सुद्धप्पं, जदि अप्पा होदि परमप्पा।।165।।**

**अन्वयार्थ**-जिस प्रकार **इंधणं**-ईंधन **अग्गिं**-अग्नि को **फासदि**-स्पर्श करता है तो **तं**-वह **णियमेण**-नियम से स्वयं **अग्गी रूवं**-अग्नि रूप **होदि**-हो जाता है **तहेव**-उसी प्रकार **जदि**-यदि **अप्पा**-आत्मा **सुद्धप्पं**-शुद्धात्मा को (स्पर्श करती है तो) **खलु**-निश्चय से (वह आत्मा ही) **परमप्पा**-परमात्मा **होदि**-होता है।

**फासदि उण्हं दुद्धं, किंचिवि दही होदि दहीरूवा हु।**
**तह पलीदि सुद्धप्पे, जदि अप्पा होदि परमप्पा।।166।।**

**अन्वयार्थ**-(जिस प्रकार) **किंचिवि**-किंचित् भी **दही**-दही **उण्हं दुद्धं**-गर्म दूध को **फासदि**-स्पर्श करती है (तो वह दूध) **दहीरूवा**-दही रूप **होदि**-हो जाता है **तह**-उसी प्रकार **जदि**-यदि **अप्पा**-आत्मा **सुद्धप्पे**-शुद्धात्मा में **पलीदि**-लीन होता है तो **खलु**-निश्चय से (वह आत्मा) **परमप्पा**-परमात्मा **होदि**-होता है।

**परोप्परे खलु घसदे, जह तरुसाहा तिव्व-उण्हदाए।**
**अग्गी वि उप्पज्जदे, रुक्खो होदि अग्गीरूवा।।167।।**

**पलीदूण अप्पेप्पा, जदि चिंतदि णिरंतरं सुद्धप्पं।**
**सो णासदि कम्माइं, णियमेणं होदि परमप्पा।।168।।**

**अन्वयार्थ**-**जह**-जिस प्रकार **तरुसाहा**-वृक्ष की शाखा **तिव्व-उण्हदाए**-तीव्र ऊष्णता से **परोप्परे**-परस्पर में **घसदे**-घर्षण करती है (तो उससे) **अग्गी**-अग्नि **उप्पज्जदे**-उत्पन्न होती है (और पुनः वह) **रुक्खो**-वृक्ष (स्वयं) **वि**-भी **अग्गीरूवो**-अग्नि रूप **होदि**-हो जाता है (उसी प्रकार) **जदि**-यदि **अप्पा**-आत्मा **अप्पे**-आत्मा में **पलीदूण**-लीन होकर **णिरंतरं**-निरंतर **सुद्धप्पं**-शुद्धात्मा का **चिंतदि**-चिंतन करता है तो **सो**-वह **हु**-निश्चय ही **कम्माइं**-कर्मों को **णासदि**-नष्ट करता है (और) **णियमेणं**-नियम से स्वयं **परमप्पा**-परमात्मा **होदि**-हो जाता है।

## सिद्ध ध्यान

**णियचित्ते णाणी जो, धारदि सुद्धसरूवं सिद्धाणं।**
**होच्चा केवलणाणिं, हवेदि सयमेव सुद्धप्पा।।169।।**

**अन्वयार्थ**-**जो**-जो **णाणी**-ज्ञानी **सिद्धाणं**-सिद्धों के **सुद्धसरूवं**-शुद्ध स्वरूप को **णियचित्ते**-अपने चित्त में **धारदि**-धारण करता है वह **केवलणाणिं**-केवलज्ञानी **होच्चा**-होकर **सयमेव**-स्वयं ही **सुद्धप्पा**-शुद्धात्मा (अर्थात् कर्मों से रहित सिद्ध) **हवेदि**-होता है।

## योगी भावना

**सुहे भाविदं णाणं, उवसग्गाइ-समागदे खयेज्जा।**
**तम्हा जोगी णिच्चं, कुणदि दुहजुद-भावणमप्पे।।170।।**

**अन्वयार्थ-सुहे**-सुख में **भाविदं**-अर्जित किया गया **णाणं**-ज्ञान **उवसग्गाइ-समागदे**-उपसर्गादि के आने पर **णस्सेज्ज**-नष्ट हो जाता है **तम्हा**-इसीलिए **जोगी**-योगी **णिच्चं**-नित्य **अप्पे**-आत्मा में **दुहजुद-भावणं**-दुखों से संयुक्त भावना **कुणदि**-करता है।

## अंतिम मंगलाचरण

**जिणदेवं जिणवाणिं, पणपरमेट्ठिं तहेव जिणधम्मं।**
**विज्जाणंदं सूरिं, णमामि णिच्चं तिजोगेहिं।।171।।**

**अन्वयार्थ-जिणदेवं**-जिनदेव **जिणवाणिं**-जिनवाणी **पणपरमेट्ठिं**-पंच परमेष्ठी **तहेव**-उसी प्रकार **जिणधम्मं**-जिनधर्म व **सूरिं विज्जाणंदं**-आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज को **णिच्चं**-नित्य **तिजोगेहिं**-तीनों योगों से **णमामि**-नमस्कार करता हूँ।

## हंस प्रवृत्ति

**ण जाणमि कव्व-सत्थं, णो जाणमि सत्थ-सायरं-पुण्णं।**
**सत्थ-भत्तीइ लिहिदं, हंसोव्व सारत्थं गहेज्ज।।172।।**

**अन्वयार्थ-**(मैं) **कव्व-सत्थं**-काव्य शास्त्र को **ण जाणमि**-नहीं जानता **पुण्णं-सत्थ-सायरं**-संपूर्ण शास्त्र सागर को भी **णो जाणमि**-नहीं जानता (यह शास्त्र मेरे द्वारा) **सत्थ-भत्तीइ**-शास्त्र भक्ति से **लिहिदं**-लिखा गया है (ज्ञानीजन) **हंसोव्व**-हंस के समान **सारत्थं**-सारभूत अर्थ को ही **गहेज्ज**-ग्रहण करें।

## ग्रंथकार की लघुता

**पमादेणं चुक्केज्ज, छलं ण घेत्तव्वं विवेगसीला।**
**खम्मामि णाणीजणा, कल्लाणाय रचिदो गंथो।।173।।**

**अन्वयार्थ-पमादेणं**-प्रमाद से (यदि ग्रंथ रचना में) **चुक्केज्ज**-कोई चूक हुई हो तो **विवेगसीला**-विवेकशील जनों को **छलं**-छल **ण घेत्तव्वं**-ग्रहण नहीं करना चाहिए (ग्रंथ में कोई भूल के लिए) **णाणीजणा**-ज्ञानीजन **खम्मामि**-मुझे क्षमा करें **गंथो**-ग्रंथ **कल्लाणाय**-स्वपर कल्याण के लिए **रचिदो**-रचा गया।

## प्रशस्ति

**रयणं गदी च पावं, णयो वीरणिव्वाणद्धे पुण्णो।**
**अस्सिण-एयारसीइ, सुहवारजोगे सुद्धप्पा।।174।।**

**अन्वयार्थ-रयणं**-रत्न-3 **गदी**-गति-4 **पावं**-पाप-5 **च**-और **णयो**-नय-2 'अंकानां वामतो गतिः' के अनुसार 2543 **वीरणिव्वाणद्धे**-वीर निर्वाणाब्धि **अस्सिण-एयारसीइ**-अश्विनी शुक्ल एकादशी **सुहवारजोगे**-शुभ वार योग में **सुद्धप्पा**-'सुद्धप्पा' नामक यह ग्रन्थ **पुण्णो**-पूर्ण हुआ।

# परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108

# वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा

## रचित व संपादित साहित्य

### मौलिक कृतियाँ

### प्राकृत साहित्य

1. प्राकृत वाणी भाग-1, 2, 3
2. अहिंसगाहारो ( अहिंसक आहार )
3. अज्ज-सक्किदी ( आर्य संस्कृति )
4. अणुवेक्खा-सारो ( अनुप्रेक्षा सार )
5. जिणवर-थोत्तं ( जिनवर स्तोत्र )
6. जदि-किदि-कम्मं ( यति कृतिकर्म )
7. णंदिणंद-सुत्तं ( नंदीनंद सूत्र )
8. णिग्गंथ-थुदी ( निर्ग्रन्थ स्तुति )
9. तच्चसारो ( तत्त्व सार )
10. धम्म-सुत्तं ( धर्म सूत्र )
11. रट्ठ-संति-महाजण्णो ( राष्ट्र शांति महायज्ञ )
12. सुद्धप्पा ( शुद्धात्मा )
13. अप्पणिब्भर भारदो ( आत्मनिर्भर भारत )
14. विज्जा-वसु-सावयायारो ( विद्या वसु श्रावकाचार )
15. अप्प-विहवो ( आत्म वैभव )
16. अट्ठंग जोगो ( अष्टांग योग )
17. णमोयार महप्पुरो ( णमोकार माहात्म्य )
18. मूल-वण्णो ( मूल वर्ण )
19. मंगल-सुत्तं ( मंगल सूत्र )
20. विस्स-धम्मो ( विश्व धर्म )
21. विस्स-पुज्जो-दियंबरो ( विश्व पूज्य दिगम्बर )
22. समवसरण सोहा ( समवशरण शोभा )
23. वयण-पमाणत्तं ( वचन प्रमाणत्व )
24. अप्पसत्ती ( आत्म शक्ति )
25. कला-विण्णाणं ( कला विज्ञान )
26. को विवेगी ( विवेकी कौन )
27. पुण्णासव-णिलयो ( पुण्यास्रव निलय )
28. तित्थयर-णामत्थुदी ( तीर्थंकर नाम स्तुति )
29. रयणकंडो ( सूक्ति कोश )
30. धम्म-सुत्ति-संगहो ( धर्म सूक्ति संग्रह )
31. कम्म-सहावो ( कर्म स्वभाव )
32. खवगराय सिरोमणी ( क्षपकराज शिरोमणि )
33. सिरि सीयलणाह चरियं ( श्री शीतलनाथ चरित्र )
34. अज्झप्प-सुत्ताणि ( अध्यात्म सूत्र )
35. समणायारो ( श्रमणाचार )

### भावार्थ

1. अज्ज-सक्किदी ( आर्य संस्कृति )
2. णिग्गंथ-थुदि ( निर्ग्रंथ स्तुति )
3. तच्च-सारो ( तत्त्वसार )
4. रट्ठसंति-महाजण्णो ( राष्ट्रशांति महायज्ञ )
5. णंदिणंद-सुत्तं ( नंदीनंद सूत्र )
6. अज्झप्प-सुत्ताणि ( अध्यात्म सूत्र )

### टीका ग्रंथ

1. प्रमेया टीका-रत्नमाला ( संस्कृत )
2. वसुधा टीका-द्रव्यसंग्रह ( संस्कृत )
3. नय प्रबोधिनी-आलाप पद्धति ( हिंदी )

## इंग्लिश साहित्य

1. Inspirational Tales Part-1 & 2
2. Meethe Pravachan Part-1

## वाचना साहित्य

1. मुक्ति का वाग्दान ( इष्टोपदेश )
2. बोधि वृक्ष ( प्रश्नोत्तर रत्नमालिका )
3. शिवपथ का रथ ( सामायिक पाठ )
4. स्वात्मोपलब्धि ( समाधि तंत्र )

## प्रवचन साहित्य

1. आईना मेरे देश का
2. उत्तम क्षमा धर्म ( आत्मा का ए.सी. रूम )
3. उत्तम आर्जव धर्म ( रंचक दगा बहुत दु:खदानी )
4. उत्तम मार्दव धर्म ( मान महाविष रूप )
5. उत्तम शौच धर्म ( लोभ पाप का बाप बखाना )
6. उत्तम सत्य धर्म ( सतवादी जग में सुखी )
7. उत्तम संयम धर्म ( जिस बिना नहिं जिनराज सीझे )
8. उत्तम तप धर्म ( तप चाहे सुरराय )
9. उत्तम त्याग धर्म ( निज हाथ दीजे साथ लीजे )
10. उत्तम आकिंचन धर्म ( परिग्रह चिंता दु:ख ही मानो )
11. उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ( चेतना का भोग )
12. खुशी के आँसू
13. खोज क्यों रोज-रोज
14. गुरुत्तं भाग 1-16
15. चूको मत
16. जय बजरंगबली
17. जीवन का सहारा
18. ठहरो! ऐसे चलो
19. तैयारी जीत की
20. दशामृत
21. धर्म की महिमा
22. ना मिटना बुरा है न पिटना
23. नारी का धवल पक्ष
24. शायद यही सच है
25. श्रुत निर्झरी
26. सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की शौर्य गाथा
27. सीप का मोती ( महावीर जयंती )
28. स्वाती की बूँद

## हिंदी गद्य रचना

1. अन्तर्यात्रा
2. अच्छी बातें
3. आज का निर्णय
4. आ जाओ प्रकृति की गोद में
5. आधुनिक समस्यायें प्रमाणिक समाधान
6. आहारदान
7. एक हजार आठ
8. कलम पट्टी बुद्धिका
9. गागर में सागर
10. गुरु कृपा
11. गुरुवर तेरा साथ
12. जिन सिद्धांत महोदधि
13. डॉक्टरों से मुक्ति
14. दान के अचिन्त्य प्रभाव
15. धर्म बोध संस्कार ( भाग 1-4 )
16. धर्म संस्कार ( भाग 1-2 )
17. निज अवलोकन
18. वसु विचार
19. वसुनन्दी उवाच
20. मीठे प्रवचन ( भाग 1-6 )
21. रोहिणी व्रत कथा
22. स्वप्न विचार
23. सद्गुरु की सीख
24. सफलता के सूत्र
25. सर्वोदयी नैतिक धर्म
26. संस्कारादित्य
27. हमारे आदर्श

## हिंदी काव्य रचना

1. अक्षरातीत
2. कल्याणी
3. चैन की जिंदगी
4. ना मैं चुप हूँ ना गाता हूँ
5. मुक्ति दूत के मुक्तक
6. हाइकू
7. हीरों का खजाना
8. सुसंस्कार वाटिका

## विधान रचना

1. कल्याण मंदिर विधान
2. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
3. चौसठऋद्धि विधान
4. णमोकार महार्चना
5. दु:खों से मुक्ति ( बृहद् सहस्रनाम महार्चना )
6. यागमंडल विधान
7. समवशरण महार्चना
8. श्री नंदीश्वर विधान
9. श्री सम्मेदशिखर विधान
10. श्री अजितनाथ विधान
11. श्री संभवनाथ विधान
12. श्री पद्मप्रभ विधान
13. श्री चंद्रप्रभ विधान ( देहरा तिजारा )
14. श्री चंद्रप्रभ विधान
15. श्री पुष्पदंत विधान
16. श्री शांतिनाथ विधान
17. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
18. श्री नेमिनाथ विधान
19. श्री महावीर विधान
20. श्री जम्बूस्वामी विधान
21. श्री भक्तामर विधान
22. श्री सर्वतोभद्र महार्चना

## संपादित कृतियाँ ( संस्कृत प्राकृत साहित्य

1. आराधना सार ( श्रीमद्देवसेनाचार्य जी )
2. आराधना समुच्चय ( श्री रविचन्द्राचार्य जी )
3. आध्यात्म तरंगिणी ( आचार्य सोमदेव सूरी जी )
4. कर्म विपाक ( आ. श्री सकलकीर्ति जी )
5. कर्म प्रकृति ( सिद्धांत चक्रवर्ती आ. श्री अभयचंद्र जी )
6. गुणरत्नाकर ( रत्नकरण्ड श्रावकाचार ) ( आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी )
7. चार श्रावकाचार संग्रह
8. जिनकल्पि सूत्र ( श्री प्रभाचंद्राचार्य जी )
9. जिन श्रमण भारती ( संकलन-भक्ति, स्तुति, ग्रंथादि )
10. जिन सहस्रनाम स्त्रोत
11. तत्त्वार्थ सार ( श्री मदमृताचन्द्राचार्य सूरि )
12. तत्त्वार्थस्य संसिद्धि
13. तत्त्वार्थ सूत्र ( आ. श्री उमास्वामी जी )
14. तत्त्वज्ञान तरंगिणी ( श्री मद्भट्टारक ज्ञानभूषण जी )
15. तच्च वियारो सारो ( आ. श्री वसुनंदी जी )
16. तत्व भावना ( आ. श्री अमितगति जी )
17. धर्म रत्नाकर ( श्री जयसेनाचार्य जी )
18. धम्म रसायण ( आ. श्री पद्मनंदी स्वामी जी )
19. ध्यान सूत्राणि ( श्री माघनंदी सूरी )
20. नीतिसार समुच्चय ( आ. श्री इंद्रनंदी स्वामी जी )
21. पंच विंशतिका ( आ. श्री पद्मनंदी जी )
22. प्रकृति समुत्कीर्तन ( सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमीचंद्राचार्य जी )
23 पंचरत्न
24. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय ( आ. श्री अमृतचंद्र स्वामी जी )
25. मरणकण्डिका ( आ. श्री अमितगति जी )
26. भगवती आराधना ( आ. श्री शिवकोटी जी स्वामी )
27. भावत्रयफलप्रदर्शी ( आ. श्री कुंथुसागर जी )
28. मूलाचार प्रदीप ( आ. श्री सकलकीर्ति स्वामी जी )
29. योगामृत ( भाग 1-2 ) ( मुनि श्रीबालचंद्र जी )
30. योगसार ( भाग 1, 2 ) ( मुनि श्री बालचंद्र जी )
31. रयणसार ( आ. श्री कुंदकुंद स्वामी )
32. वसुऋद्धि
    - रत्नमाला ( आ. श्री शिवकोटि स्वामी जी )
    - पूज्यपाद श्रावकाचार ( आ. श्री पूज्यपाद जी )
    - लघु द्रव्य संग्रह ( आ. श्री नेमीचंद्र स्वामी जी )
    - अर्हत प्रवचनम् ( आ. श्री प्रभाचंद्र स्वामी जी )
    - स्वरूप संबोधन ( आ. श्री अकलंक देव जी )
    - इष्टोपदेश ( आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी )
    - वैराग्यमणि माला ( आ. श्री विशाल कीर्ति जी )
    - ज्ञानांकुश ( आ. श्री योगीन्द्र देव )
33. सुभाषित रत्न संदोह ( आ. श्री अमितगति स्वामी जी )
34. सिन्दूर प्रकरण ( आ. श्री सोमदेव स्वामी जी )
35. समाधि तंत्र ( आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी )
36. समाधि सार ( आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी )
37. सार समुच्चय ( आ. श्री कुलभद्र स्वामी जी )
38. विषापहार स्तोत्र ( महाकवि धनंजय जी )

## प्रथमानुयोग साहित्य

1. अमरसेन चरित्र ( कविवर माणिक्कराज जी )
2. आराधना कथा कोष ( ब्र. श्री नेमीदत्त जी ) ( भाग 1-2-3 )
3. करकण्डु चरित्र ( मुनि श्री कनकामर जी )
4. कोटिभट श्रीपाल चरित्र ( आ. श्री सकलकीर्ति जी )
5. गौतम स्वामी चारित्र ( मण्डलाचार्य श्री धर्मचंद्र जी )
6. चारूदत्त चरित्र ( ब्र. श्री नेमीदत्त जी )
7. चित्रसेन पद्मावती चरित्र ( पं. पूर्णमल्ल जी )
8. चेलना चारित्र
9. चंद्रप्रभ चरित्र
10. चौबीसी पुराण
11. जिनदत्त चरित्र ( कविवर ब्रह्मराय )
12. त्रिवेणी ( संग्रह ग्रंथ )
13. देशभूषण कुलभूषण चरित्र
14. धर्मामृत ( भाग 1-2 ) ( श्री नयसेनाचार्य जी )
15. धन्यकुमार चरित्र ( आ. श्री सकलकीर्ति जी )
16. नागकुमार चरित्र ( आ. श्री मल्लिषेण जी )
17. नंगानंग कुमार चरित्र ( श्रीमान् देवदत्त )
18. प्रभंजन चरित्र ( कविवर ब्रह्मराय )
19. पाण्डव पुराण ( श्री मदाचार्य शुभचंद्र देव )
20. पार्श्वनाथ पुराण ( आ. श्री सकलकीर्ति जी )
21. पुण्याश्रव कथा कोष ( भाग 1-2 ) ( श्री रामचंद्र मुमुक्षु )
22. पुराण सार संग्रह ( भाग 1-2 ) ( आ. श्री दामनंदी जी )
23. भरतेश वैभव ( कवि रत्नाकर )
24. भद्रबाहु चरित्र
25. मल्लिनाथ पुराण ( आ. श्री सकलकीर्ति जी )
26. महीपाल चरित्र ( कविवर श्री चारित्र भूषण )
27. महापुराण ( भाग 1-2 )
28. महावीर पुराण ( आ. श्री सकलकीर्ति जी )
29. मौनव्रत कथा ( आ. श्री श्रीचंद्र स्वामी जी )
30. यशोधर चरित्र
31. रामचरित्र ( भाग 1-2 ) ( आ. श्री सोमदेव स्वामी )
32. रोहिणी व्रत कथा
33. व्रत कथा संग्रह
34. वरांग चरित्र ( आ. श्री जटासिंह नंदी )
35. विमलनाथ पुराण ( श्री ब्रह्मचारीश्वर कृष्णदास जी )
36. वीर वर्धमान चरित्र
37. श्रेणिक चरित्र
38. श्रीपाल चरित्र ( आ. श्री सकलकीर्ति जी )
39. श्री जम्बूस्वामी जी चरित्र ( श्री वीर कवि )
40. शांतिनाथ पुराण ( भाग 1-2 ) ( कवि असग जी )
41. सप्तव्यसन चरित्र ( आ. श्री सोमकीर्ति भट्टारक )
42. सम्यक्त्व कौमुदी
43. सती मनोरमा
44. सीता चरित्र ( श्री दयाचंद गोलीय )
45. सुरसुंदरी चरित्र
46. सुलोचना चरित्र
47. सुकुमाल चरित्र
48. सुशीला उपन्यास
49. सुदर्शन चरित्र ( पं. गोपालदास बैरया )
50. सुभौम चरित्र
51. हनुमान चरित्र
52. क्षत्र चूड़ामणि ( जीवंधर चरित्र )

## संपादित हिंदी साहित्य

1. अरिष्ट निवारक त्रय विधान
   - नवग्रह विधान
   - वास्तु निवारण
   - मृत्युंजय ( पं. आशाधर जी कृत )
2. श्री जिनसहस्त्रनाम एवं पंचपरमेष्ठी विधान
3. श्री जिनसहस्त्रानाम विधान ( लघु ) आदि एक नाम अनेक
4. शाश्वत शांतिनाथ ऋद्धि विधान
   - भक्तामर विधान ( आ. मानतुंग स्वामी जी ( मूल ) )
   - शांतिनाथ विधान ( पं. ताराचंद्र जी )
   - सम्मेदशिखर विधान ( पं. जवाहर दास जी )
5. कुरल काव्य ( संत तिरुवल्लुवर )
6. तत्त्वोपदेश ( छहढ़ाला ) ( पुं. प्रवर दौलतराम जी )
7. दिव्य लक्ष्य ( संकलन-हिंदी पाठ, स्तुति आदि )
8. धर्म प्रश्नोत्तर ( आ. श्री सकलकीर्ति जी )
9. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार ( आ. श्री सकलकीर्ति जी )
10. भक्तिसागर ( चौबीसी चालीसा संग्रह )
11. विद्यानंद उवाच ( आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज )
12. सुख का सागर ( चौबीसी चालीसा )
13. संसार का अंत
14. स्वास्थ्य बोधामृत

## गुरु पद विनयांजली साहित्य

1. आचार्य श्री विद्यानंद जी की यम सल्लेखना ( मुनि प्रज्ञानंद )
2. अक्षर शिल्पी ( मुनि शिवानंद )
3. पगवंदन ( मुनि शिवानंद प्रशमानंद )
4. वसुनंदी प्रशनोत्तरी ( मुनि जिनानंद, ऐ विज्ञान सागर )
5. दृष्टि दृश्यों के पार ( आ. श्री वर्धस्वनंदनी, वर्चस्वनंदनी )
6. स्मृति पटल से भाग 1-2 ( आ. श्री वर्धस्वनंदनी )
7. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी ( ऐलक विज्ञान सागर )
8. गुरु आस्था ( ऐलक विज्ञान सागर )
9. परिचय के गवाक्ष में ( ऐलक विज्ञान सागर )
10. स्वर्णोदय ( ऐलक विज्ञान सागर )
11. स्वर्ण जन्मजयंती महोत्सव ( ऐलक विज्ञान सागर )
12. हस्ताक्षर ( ऐलक विज्ञान सागर )
13. वसु सुबंध ( महाकाव्य ) ( प्रो. डॉ. उदयचंद्र जी जैन )
14. समझाया रविन्दु न माना ( सचिन जैन 'निकुंज )